mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-05 अंक-86 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना

30 मार्च 2025 रविवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

ईशान के आउट होते ...

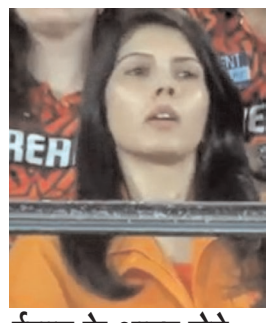

@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

बीजिंग की गोद में बांग्लादेश, चीन को बताया अच्छा दोस्त

बीजिंग (एजेंसी)। बांग्लादेश अब पूरी तरह चीन की गोद में बैठना चाह रहा है। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस ने शनिवार को कहा कि उनके देश के लिए चीन को एक अच्छे मित्र के रूप में देखना ''महत्वपूर्ण'' है और उन्हें उम्मीद है कि ढाका और बीजिंग के बीच संबंध एक नए चरण में प्रवेश करेंगे। यूनुस ने अपनी चार दिवसीय चीन यात्रा के समापन पर आज यह बात कही। यूनुस

ने कहा, ''पिछले कुछ वर्षों में हमारे संबंध बहुत प्रगाढ़ रहे हैं। हमारे व्यापारिक रिश्ते बहुत मजबूत हैं और चीन के साथ हमारे सहयोग से हमें लाभ मिलता है।''यूनुस के आधिकारिक हैंडल से 'एक्स' पर किए गए पोस्ट में कहा गया, ''चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग के मुख्य प्रोटोकॉल अधिकारी और विदेश मंत्रालय के सहायक मंत्री होंग लेई ने शनिवार को बीजिंग कैपिटल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर यूनुस को उनकी ऐतिहासिक चार दिवसीय चीन यात्रा के समापन के बाद विदा किया।'' यूनुस ने शुक्रवार को चिनफिंग से मुलाकात की और राजनीतिक और आर्थिक संकट से प्रभावित बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिए चीन से निवेश बढ़ाने का आग्रह किया।भारत के मुकाबले बीजिंग को अधिक तरजीह देते हुए यूनुस ने कहा, ''यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम चीन को अपने अच्छे दोस्त के रूप में देखें।''

किडनैपर समझकर भीड़ ने 16 लोगों को मार डाला

अबुजा (एजेंसी)। अफ्रीकी देश नाइजीरिया के दक्षिणी हिस्से में भीड़ ने किडनैपर होने के शक में 16 लोगों की बेरहमी से हत्या कर दी। अधिकारियों द्वारा शुक्रवार को दी गई जानकारी के मुताबिक, पीड़ितों में से कुछ के कंधों और सिर पर टायर रखकर आग लगा दी गई, जिनसे उनकी दर्दनाक मौत हो गई। घटना में मारे गए लोग देश के उत्तरी हिस्से से थे और उन्हें एडो राज्य के उरोमी इलाके में स्थानीय सुरक्षाकर्मियों ने रोका था। एडो पुलिस के प्रवक्ता मूसा यामू ने एक बयान में कहा कि मृतकों की गाड़ी की तलाशी के दौरान अधिकारियों को स्थानीय स्तर पर बनाए गए हथियार मिले थे और इसी वजह से भीड़ ने उन पर हमला बोल दिया। सोशल मीडिया पर

शेयर किए गए वीडियो में पीड़ितों के साथ जमकर बर्बरता होते हुए देखा गया और फिर उन्हें घिसे-पिटे टायरों की आग में झोंक दिया गया। बता दें कि पिछले एक दशक में नाइजीरिया में भीड़ द्वारा की जाने वाली हिंसा में वृद्धि देखने को मिली है। एमनेस्टी इंटरनेशनल की 2024 की रिपोर्ट के मुताबिक, जहां देश के दक्षिणी हिस्से में हमले अक्सर चोरी और जादू-टोने के आरोपों से जुड़े होते हैं, वहीं उत्तर में कथित ईशनिंदा को लेकर लिंचिंग होती है। 2022 में लागोस स्थित रिसर्च ग्रुप स्क्क्रू इंटेलिजेंस ने कहा था कि 2019 के बाद से अफ्रीका के सबसे ज्यादा आबादी वाले देश में कम से कम 391 भीड़ द्वारा हत्याएं हुई हैं। यामू ने बताया कि गुरुवार को हुए हमले में पीड़ितों के ग्रुप से 10 लोगों को बचा लिया गया। उन्होंने बताया कि इसके अलावा 2 लोग घायल होने के कारण अस्पताल में भर्ती हैं। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि हमले के सिलसिले में 14 संदिग्धों को गिरफ्तार किया गया है।

ट्रांसजेंडर बन भीख मांग रहे थे छह बांग्लादेशी घुसपैठिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के जहांगीरपुरी इलाके से पुलिस ने 6 संदिग्ध अवैध बांग्लादेशियों को गिरफ्तार किया जो पहचान छिपाने के लिए 'ट्रांसजेंडर' बन महिलाओं का वेश धारण किए हुए थे। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि उन्होंने अपना हुलिया बदलने और स्थानीय 'ट्रांसजेंडर' समुदाय में घुलने-मिलने के लिए 'छोटी-मोटी सर्जरी' और 'हार्मोनल उपचार' भी कराया था। पुलिस ने बताया कि वे बांग्लादेश में अपने परिवार से संपर्क करने के लिए एक प्रतिबंधित ऐप का इस्तेमाल करते पाए गए। सभी छह अवैध

बांग्लादेशियों को निर्वासन कार्यवाही के लिए आर. के. पुरम स्थित विदेशी क्षेत्रीय पंजीकरण कार्यालय को सौंप दिया गया। दिल्ली के गृह मंत्री आशीष सूद ने शुक्रवार को एक बयान में कहा कि राष्ट्रीय राजधानी में एक भी अवैध घुसपैठिए को रहने की इजाजत नहीं दी जाएगी। सूद ने कहा, ''पुलिस के सहयोग से बांग्लादेशी घुसपैठियों और उन्हें शरण देने वालों सहित सभी अवैध घुसपैठियों के खिलाफ एक सुनियोजित कार्रवाई की जाएगी। सरकार दिल्ली से अवैध घुसपैठियों को हटाने के लिए प्रतिबद्ध है।'' उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय राजधानी में जल्द ही सकारात्मक परिणाम दिखाई देंगे। ये गिरफ्तारियां गुरुवार को कुछ क्षेत्रों में अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों पर 10 दिनों के निगरानी अभियान के दौरान की गईं। पुलिस अधिकारी ने बताया, ''गुप्त सूचना के आधार पर विदेशी प्रकोष्ठ की एक पुलिस टीम गठित की गई। हमें पता चला कि कुछ अवैध बांग्लादेशी प्रवासी 'ट्रांसजेंडर' के वेश में संदेह से बचने के लिए लाल बत्ती पर भीख मांग रहे हैं।''

ममता बनर्जी की सरकार पर बरसे अमित शाह

'अवैध प्रवासियों को अपना वोटर बनाना चाहती है टीएमसी'

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पश्चिम बंगाल की तृणमूल कांग्रेस सरकार पर अवैध प्रवासियों को पार्टी के वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल करने का आरोप लगाया और कहा कि केंद्र सरकार इस तरह के कदम को सफल नहीं होने देगी। पश्चिम बंगाल सरकार के भाजपा नीत केंद्र के साथ टकराव के बारे में पूछे जाने पर शाह ने शुक्रवार को टाइम्स नाउ समिट 2025 में कहा कि कोई टकराव नहीं हुआ है। उन्होंने कहा, ÷वे अवैध प्रवासियों को अपने वोट बैंक के रूप में देखते हैं। वे अवैध प्रवासियों को अपना मतदाता बनाना चाहते हैं। लेकिन हम किसी भी पार्टी को अवैध प्रवासियों को वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं दे सकते।÷

बता दें बिहार में इस साल विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। अक्टूबर-नवंबर महीने में विधानसभा चुनाव कराए जाने की संभावना है। इस बीच केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह आज पश्चिम

बंगाल के दौरे परजाने वाले हैं। इस दौरान बिहार में राजनीतिक सरगर्मी बढ़ चुकी है और नेताओं का बिहार में आना-जाना भी शुरू हो चुका है। इस बीच अमित शाह 29 मार्च और 30 मार्च को अलग-अलग कार्यक्रमों में भाग लेंगे। इस दौरान 30 मार्च को गोपालगंज में एक रैली को अमित शाह संबोधित भी करेंगे। 30 मार्च को अमित शाह 800 करोड़ रुपये से अधिक के विभिन्न विकास कार्यों का उद्घाटन एवं शिलान्यास करेंगे। सुबह 10.30 बजे पटना स्थित बापूर सभागार में इसका आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा गोपालगंज जिले में दोपहर 12 बजे अमित शाह एक जनसभा को संबोधित करेंगे। इसके अलावा पटना में दोपहर 3 बजे एनडीए की बैठक में अमित शाह भाग लेंगे।

बिहार में 65 साल के बुजुर्ग को दी गई बलि

धार (एजेंसी)। बिहार के औरंगाबाद जिले से सनसनीखेज वारदात सामने आई है। जहां कुछ लोगों और एक तांत्रिक द्वारा 65 वर्षीय एक व्यक्ति की बलि दे दी गई। बुजुर्ग शख्स को बलि दिए जाने के बाद उसके धड़ को होलिका दहन की

आग में जला दिया गया। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। औरंगाबाद के पुलिस अधीक्षक अंबरीश राहुल ने कहा, 13 मार्च को मदनपुर पुलिस को गुलाब बिगहा गांव के निवासी युगल यादव (65) की गुमशुदगी की शिकायत मिली थी। मामला दर्ज कर उनकी तलाश के लिए पुलिस ने एक विशेष जांच दल गठित किया। जांच के दौरान अधिकारियों को पड़ोसी गांव पूर्णाडीह गांव के समीप बंगरे गांव में होलिका दहन सामग्री से अपहृत व्यक्ति का हड्डियां मिलने की जानकारी मिली।' एसपी अंबरीश राहुल ने कहा, 'अधिकारियों ने होलिका दहन वाले स्थान का निरीक्षण किया, जहां उन्हें जली हुई मानव हड्डियां और उक्त अपहृत व्यक्ति का चप्पल बरामद हुई।

चैत्र नवरात्रि के पहले दिन छुट्टी घोषित करने की मांग

विश्व हिंदू परिषद ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को पत्र लिखा

नई दिल्ली (एजेंसी)। विश्व हिंदू परिषद के दिल्ली प्रांत मंत्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को पत्र लिखकर चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिन अवकाश घोषित करने की मांग की है। अपने पत्र में उन्होंने रेखा गुप्ता को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनने की बधाई देते हुए दिल्ली सरकार द्वारा हिंदू नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के मौके पर भव्य सांस्कृतिक आयोजन करने का निर्णय लिए जाने पर हर्ष जताया। साथ ही वीएचपी नेता ने दिल्ली की मुख्यमंत्री को कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए अग्रिम बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

अपने पत्र में वीएचपी के दिल्ली प्रांत मंत्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता ने सीएम से मांग की है कि चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिन को इस साल और आने वाले सालों के लिए अवकाश घोषित किया जाए। उन्होंने पत्र में लिखा कि इस कदम से भारतीय समाज में अपनी संस्कृति के प्रति जागरूकता बढ़ेगी और हमारा समाज अपनी संस्कृति के प्रति गर्व अनुभव करेगा। बता दें कि इस बार चैत्र नवरात्रि का पहला दिन रविवार को पड़ रहा है। हिंदू समाज के करोड़ों लोग चैत्र नवरात्रि के दौरान व्रत रखते हैं और विभिन्न अनुष्ठान करते हैं।

बता दें कि दिल्ली सरकार में मंत्री कपिल मिश्रा ने हिंदू नववर्ष पर भव्य कार्यक्रमों के आयोजन की बात की है।

उन्होंने कहा, हम लोग बड़े कार्यक्रम का आयोजन करने जा रहे हैं जिसकी शुरूआत दिल्ली विधानसभा से होगी। कला एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 2025 का बड़ा कार्यक्रम शुरू होने जा रहा है। जैसे दिवाली, 15 अगस्त या 26 जनवरी पर विधानसभा को सजाया जाता है उसी तरह से विधानसभा को सजाकर हिंदू नववर्ष का अछा उत्सव मनाया जाएगा। इन सभी कार्यक्रमों की श्रृंखला अंबेडकर जयंती पर जाकर पूर्ण होगी।

'कठिन समय में साथ खड़ा है भारत'

पीएम मोदी ने म्यांमार के सेना प्रमुख से की बात, बोले

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार म्यांमार में आए भूकंप के बाद हुए जानमाल के नुकसान पर दुख व्यक्त किया है। उन्होंने म्यांमार के जनरल मिन आंग ह्लाइंग से बात की है। पीएम मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर इसकी जानकारी दी है। पीएम मोदी ने म्यांमार के जनरल को इस कठिन समय में एकजुटता से खड़े रहने का आश्वासन दिया। पीएम मोदी ने म्यांमार के लोगों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि भारत, एक करीबी मित्र और पड़ोसी देश होने के नाते इस कठिन घड़ी में म्यांमार के साथ खड़ा है।

पीएम मोदी ने म्यांमार के जनरल मिन आंग ह्लाइंग से बात की। बातचीत के बात एक्स पर उन्होंने एक पोस्ट किया। अपनी पोस्ट में पीएम मोदी ने लिखा, ÷म्यांमार के वरिष्ठ जनरल मिन आंग ह्लाइंग से बात की। विनाशकारी भूकंप में हुई मौतों पर अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की। एक करीबी मित्र और पड़ोसी देश के रूप में भारत इस कठिन समय में म्यांमार के लोगों के साथ एकजुटता

से खड़ा है। ऑपरेशन ब्रह्मा के तहत आपदा राहत सामग्री, मानवीय सहायता, खोज और बचाव दल को प्रभावित क्षेत्रों में तेजी से भेजा जा रहा है। बता दें कि भारत ने म्यांमार में आए शक्तिशाली भूकंप के बाद राहत सामग्री की पहली खेप भेज दी है। भारत की ओर से सहायता के तौर पर म्यांमार को 15 टन राहत सामग्री भेजी गई है। हिंडन में मौजूद भारत वायुसेना के हिंडन स्टेशन से भारतीय वायुसेना के (आईएएफ) सी-130जे विमान में म्यांमार के लिए राहत सामग्री भेजी गई। इस राहत पैकेज में टेंट, स्लीपिंग बैग, कंबल, खाने के लिए तैयार भोजन, वाटर प्यूरीफायर, हाइजीन किट, सोलर लैंप, जनरेटर सेट और पैरासिटामोल, एंटीबायोटिक्स, सीरिंज, दस्ताने और पट्टियां जैसी आवश्यक जीचें शामिल हैं।

दरअसल, म्यांमार और उसके पड़ोसी देश थाईलैंड में शुक्रवार को भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। इस भूकंप से ऊंची इमारतें, पुल और बांध नष्ट हो गए। इस भूकंप की वजह से म्यांमार में कम से कम 1000 लोगों की मौत हुई है, जबकि 1700 लोग घायल हैं।

'डॉ. हेडगेवार आने वाली चुनौतियों को समझते थे'

आरएसएस के 100 साल पूरे होने पर बोले होसबाले

बेंगलुरु (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ यानी कि आरएसएस के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने संघ के शताब्दी वर्ष के मौके पर कर्नाटक की मशहूर साप्ताहिक पत्रिका विक्रमा को एक खास इंटरव्यू दिया है। यह इंटरव्यू युगादी के अवसर पर विक्रमा साप्ताहिक के विशेष संस्करण संघ शतमान के लिए लिया गया, जिसमें संघ के 100 साल के सफर को दर्शाया गया है। करीब 2.5 घंटे तक चली इस गहन बातचीत में होसबाले ने विक्रमा के संपादक रमेश डोड्डापुरा से संघ की शुरुआत, समाज में इसके योगदान, मंदिर पुनरुद्धार, जाति जैसे मुद्दों और भविष्य की योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की। हम आपको इस इंटरव्यू के कुछ मुख्य अंशों के बारे में बता रहे हैं।

दत्तात्रेय होसबाले ने शाखा को संघ की रीढ़ बताते हुए कहा कि यह व्यवस्था

करीब 100 साल पहले व्यक्तित्व निर्माण के लिए शुरू की गई थी। उन्होंने बताया कि अगर किसी गांव या शहर में शाखा है, तो समझ लीजिए कि वहां संघ मौजूद है। संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने आजादी के आंदोलन में हिस्सा लिया था और अपने अनुभवों से शाखा की नींव रखी। होसबाले ने कहा, शाखा पूरी तरह खुली और साधारण गतिविधि है, जो रोजाना एक घंटे सार्वजनिक जगहों पर होती है। इसमें कोई रहस्य नहीं है, लेकिन इसे चलाना आसान नहीं है। इसके लिए सालों तक रोजाना शामिल होने की लगन, अनुशासन और बिना फल की इच्छा के समर्पण चाहिए। कुछ संगठनों ने शाखा की नकल करने की कोशिश की, लेकिन निस्वार्थ भाव और त्याग के बिना वे सफल नहीं हुए। होसबाले ने एक लोकप्रिय संघ गीत का ज़िक्र करते हुए कहा, शुद्ध सात्विक प्रेम अपने कार्य का आधार है। उन्होंने कहा कि यही भावना शाखा को एक सदी तक मजबूत बनाए रखने का कारण है।

प्रचारक व्यवस्था की प्रेरणा और उत्पत्ति प्रचारक व्यवस्था पर होसबाले ने बताया कि इसके सटीक स्रोत का पता नहीं है, लेकिन यह भारतीय परंपरा से प्रभावित लगती है। उन्होंने कहा कि हमारे देश में हजारों सालों से साधु-संत और ऋषि-मुनि समाज और धर्म के लिए अपना जीवन समर्पित करते रहे हैं। आजादी के आंदोलन में भी कई युवाओं ने निजी महत्वाकांक्षाओं को छोड़कर देश के लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया। डॉ. हेडगेवार खुद ऐसे माहौल से आए थे।

सैफ अली खान पर हमले के आरोपी ने कोर्ट में डाली जमानत याचिका

मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड अभिनेता सैफ अली खान पर हमला करने वाले आरोपी शरीफुल इस्लाम शहजाद ने मुंबई सत्र न्यायालय में जमानत याचिका दायर की है। अपने वकील के माध्यम से दायर याचिका में उसने दावा किया है कि उसने कोई अपराध नहीं किया है और उसके खिलाफ मामला मनगढ़ंत है। हालांकि पुलिस के पास पहले से ही सारे सबूत मौजूद हैं। पुलिस ने इस मामले में सभी लोगों के बयान भी दर्ज किए हैं। बता दें कि अभिनेता सैफ अली खान पर आरोपी ने चाकू से हमला किया था। उनके मुंबई स्थित फ्लैट पर ये हमला किया गया। दरअसल, सैफ अली खान पर हमला करने वाले आरोपी ने मुंबई की सत्र न्यायालय में जमानत याचिका दायर की है। आरोपी शरीफुल इस्लाम शहजाद के वकील ने यह याचिका दायर की है। मुंबई सत्र न्यायालय में दायर की गई याचिका में कहा गया है कि आरोपी के खिलाफ दर्ज की गई स्नद्बक्र गलत तरीके से बनाई गई है।

यूपी में धार्मिक स्थलों के पास बूचड़खानों और मांस बिक्री पर पूरी तरह प्रतिबंध

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में धार्मिक स्थलों के पास अवैध बूचड़खानों और मांस बिक्री पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया है। योगी सरकार ने कड़ा फैसला लेते हुए धार्मिक स्थलों के 500 मीटर के दायरे में मांस बिक्री पर पूरी

● यूपी की योगी सरकार का बड़ा फैसला

तरह बैन लगा दिया गया है। यह फैसला तत्काल लागू कर दिया दिया गया है। अवैध बूचड़खानों पर कार्रवाई करने का आदेश दिया गया है।

नगर विकास विभाग के प्रमुख सचिव अमृत अभिजात ने सभी जिलाधिकारियों, पुलिस आयुक्तों और नगर आयुक्तों को बूचड़खानों को

तत्काल बंद करने और धार्मिक स्थलों के पास मांस बिक्री पर प्रतिबंध लागू करने के निर्देश दिए हैं।

मांस बिक्री पर निगरानी करने के लिए बनी समितिः जानकारी के अनुसार, अवैध बूचड़खानों और मांस बिक्री पर निगरानी करने के लिए पुलिस, स्वास्थ्य, परिवहन और खाद्य सुरक्षा अधिकारी निगरानी करेंगे। सरकार ने इसके लिए विशेष जिला स्तरीय समिति गठित की है। राम नवमी पर विशेष सख्ती बरतने का आदेश दिया गया है। 6 अप्रैल को पशु वध और मांस बिक्री पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगा। उल्लंघन करने वालों पर यूपी नगर निगम अधिनियम और खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत सख्त कार्रवाई करने का आदेश दिया गया है।

पुराने आदेश कड़ाई से लागू होंगेः 2014 और 2017 में जारी आदेशों का हवाला देते हुए योगी सरकार ने स्पष्ट किया है कि अवैध पशु वध और धार्मिक स्थलों के पास मांस बिक्री पूरी तरह प्रतिबंधित होगी। इस फैसले को प्रभावी बनाने के लिए जिलाधिकारियों की अध्यक्षता में जिला स्तरीय समितियों का गठन किया गया है। इनमें पुलिस, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, पशुपालन विभाग, परिवहन विभाग, श्रम विभाग, स्वास्थ्य विभाग और खाद्य सुरक्षा प्रशासन के अधिकारी शामिल होंगे।

राम नवमी पर विशेष निगरानीः 6 अप्रैल 2025 को राम नवमी के दिन विशेष प्रतिबंध लागू होगा, इस दिन पशु वध और मांस की बिक्री पूरी तरह बंद रहेगी। यूपी नगर निगम अधिनियम 1959 और खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2006 एवं 2011 के प्रावधानों के तहत, योगी सरकार ने अधिकारियों को उल्लंघन करने वालों पर कड़ी दंडात्मक कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं।

इंदौर शहर में 5 लाख से अधिक स्मार्ट मीटर स्थापना कार्य पूर्ण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी केंद्र एवं राज्य शासन की प्राथमिकता वाली स्मार्ट मीटर परियोजना का अत्यंत तेजी से प्रभावी रूप से संचालन कर रही हैं। शुक्रवार को इंदौर शहर में स्मार्ट मीटर स्थापना का आंकड़ा 5 लाख पार कर गया। इस उपलब्धि पर प्रदेश के ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने पश्चिम क्षेत्र कंपनी के कार्मिकों को बधाई दी है। मप्र पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी इंदौर के प्रबंध निदेशक श्री अनूप कुमार सिंह ने बताया कि स्मार्ट मीटर सेल के साथ ही जिलों की टीम स्मार्ट मीटर परियोजना का बहुत ही गंभीरता से संचालन कर गुणवत्ता से मीटर स्थापना, सटीक रीडिंग, डाटा कलेक्शन, त्रुटिरहित बिलिंग इत्यादि कार्य कर रही हैं। एमडी श्री सिंह ने बताया कि उपभोक्ता सेवाओं में वृद्धि करते हुए स्मार्ट मीटरीकरण तेजी से जारी हैं। इसी के तहत इंदौर शहर में 5 लाख 500 स्मार्ट मीटर लग चुके हैं। यह संख्या मप्र के किसी भी शहर में सर्वाधिक हैं। इंदौर के बाद कंपनी क्षेत्र के उज्जैन जिले में 1.12 लाख, रतलाम जिले में 1.10 लाख स्मार्ट मीटर लग चुके हैं। अन्य जिलों में 10 हजार से 55 हजार स्मार्ट मीटर स्थापित कर दिए गए हैं। कंपनी क्षेत्र में 11.46 लाख स्मार्ट मीटर स्थापना कार्य पूर्ण कर लिया गया है। वर्तमान में करीब ढाई से 3000 स्मार्ट मीटर प्रतिदिन लगाए गए हैं। स्मार्ट मीटर रूफ टॉप सोलर नेट मीटर एवं टाइम ऑफ द डे बिल प्रणाली में भी कारगार साबित होकर उपभोक्ताओं को रियायत दिला रहे हैं।

74,697 किसानों से 5 लाख 80 हजार मीट्रिक टन से अधिक हुई गेहूँ खरीदी -खाद्य मंत्री राजपूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बताया है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर प्रदेश में अभी तक 74697 किसानों से 5 लाख 80 हजार 711 मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन किया जा चुका है। किसानों को उपार्जित गेहूँ का भुगतान भी लगातार किया जा रहा है। अभी तक 757 करोड़ 36 लाख रूपये का भुगतान किसानों को किया जा चुका है। गेहूँ का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2425 रूपये है और राज्य सरकार द्वारा 175 रूपये प्रति क्विंटल बोनस दिया जा रहा है। इस तरह से गेहूँ की खरीदी 2600 रूपये प्रति क्विंटल की दर से की जा रही है। जिला उज्जैन में एक लाख 19 हजार 535, सीहोर में 83735, देवास में 60456, शाजापुर में 60282, इंदौर में 42765, भोपाल में 38640, राजगढ़ में 36457, मंदसौर 25292, आगर मालवा में 23604, धार में 20564, विदिशा में 19593, हरदा में 13451, खण्डवा में 11082, रतलाम में 10857, नीमच में 3351, नर्मदापुरम में 3307, झाबुआ में 2965, रायसेन में 2708, बैतूल में 1000, दमोह में 460, खरगौन में 329, गुना में 252, सागर में 22 और अलीराजपुर में 4 मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन किया जा चुका है।

मीणा समाज का मत्स्य जयंती महोत्सव

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश में मीणा समाज के आराध्य देव भगवान मत्स्य का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। इस वर्ष मध्य प्रदेश शासन ने 2 अप्रैल को मत्स्य जयंती पर ऐच्छिक अवकाश घोषित किया है। मध्य प्रदेश मीणा समाज सेवा संगठन के प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व मंत्री रामनिवास रावत ने बताया कि समाज के कार्यकर्ता घर-घर जाकर पीले चावल के साथ निमंत्रण दे रहे हैं। कार्यक्रम को भव्य बनाने के लिए सभी जिलों के सामाजिक प्रतिनिधि और कार्यकारिणी सदस्य जुटे हुए हैं। जय मीनेश कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष श्री लालाराम मीणा विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में शिरकत करेंगे। रायसेन से मिट्ठू लाल मीणा, राजगढ़ से बृजकिशोर मीना, खंडवा से संतोष मीणा और इंदौर से सत्यनारायण मीणा समेत कई जिला अध्यक्ष अपने-अपने क्षेत्रों में कार्यक्रम की तैयारियों में जुटे हैं।

समाज के समस्त प्रश्नों का समाधान, शिक्षा के मंदिरों से होगा : उच्च शिक्षा मंत्री परमार

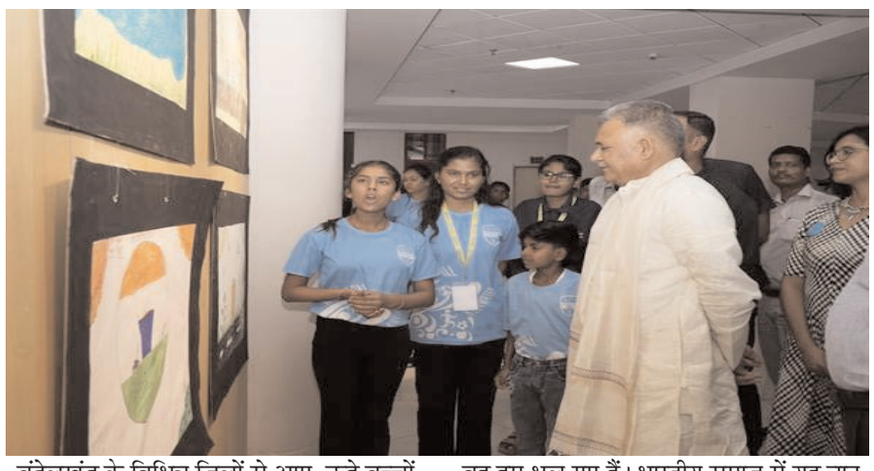

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। समाज में किसी भी तरह के संकट का समाधान करने कोई और नहीं आएगा। समाज के संकटों के समाधान भी, समाज की ही सहभागिता से संभव हैं। वर्तमान परिदृश्य में जल संकट एक सामाजिक प्रश्न हैं, इसका समाधान भी समाज को ही करना होगा। जल की एक-एक बूंद हमारे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है! जनजागृति का यह संदेश जन-जन तक पहुंचे और जल संरक्षण के प्रति सामाजिक चेतना की जागृति हो, यह अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। वैश्विक परिधियों में आने वाले समय में कुछ ऐसे भी और संकट हैं, जिनके समाधान हमें शिक्षा के माध्यम से ही मिलेंगे। समाज के समस्त प्रश्नों का समाधान, हमारे शिक्षा के मंदिर ही करेंगे और हम उसकी ओर आगे बढ़ रहे हैं। यह बात उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार ने शुक्रवार को भोपाल स्थित रविन्द्र भवन में परमार्थ समाजसेवी संस्था और समर्थन संस्था के संयुक्त तत्वावधान में जल संरक्षण के प्रति जागरुकता के लिए आयोजित दो दिवसीय वॉटर फॉर ऑल - ऑल फॉर वॉटर कार्यक्रम का शुभारम्भ कर कही। मंत्री श्री परमार ने प्रदेश के बुंदेलखंड के विभिन्न जिलों से आए, नन्हे बच्चों एवं विद्यालयीन विद्यार्थियों के द्वारा जल संरक्षण पर तैयार की गई प्रदर्शनी का शुभारम्भ भी किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार ने कहा कि वर्तमान परिदृश्य में जल का संरक्षण करना बहुत बड़ी चुनौती है और यह चुनौती इस रूप में है कि हमारे पूर्वजों ने जल का संरक्षण करने का मंत्र दिया था लेकिन वह हम भूल गए हैं। भारतीय समाज में यह ज्ञान रूपी मंत्र, पूर्वजों के द्वारा स्थापित परम्पराओं एवं मान्यताओं के रूप में विद्यमान है। जल संकट अलावा भी दूसरे संकट सामने दिखने लगे हैं, इसके लिए फिर से जन जागरण करने की आवश्यकता है। लोगों को जल संरक्षण के विभिन्न तरीकों से अवगत कराना, यह केवल सरकार का ही नहीं बल्कि समाज का भी दायित्व है और हर सामाजिक संगठन और हर व्यक्ति की भी जिम्मेदारी है। मंत्री श्री परमार ने कहा कि जल संरक्षण के लिए कुछ ना कुछ प्रयास करें। जल संरक्षण को लेकर किए जा रहे प्रयासों को और गति देनी होगी। मंत्री श्री परमार ने कार्यक्रम आयोजक संगठनों की सराहना करते हुए कहा कि आपने जो जन-जागरण का जिम्मा उठाया है, इससे निश्चित रूप से समाज में जागृति आएगी।

मंत्री श्री परमार ने कहा कि आज पानी, जमीन में नहीं जा रहा है। पानी जमीन में जाने का सबसे बड़ा माध्यम वृक्ष है। पानी को बचाने के लिए वृक्षों का भी होना बहुत आवश्यक है, इसके लिए प्रचुर मात्रा में वृक्षारोपण भी आवश्यक है। मंत्री श्री परमार ने कहा कि जल संरक्षण के प्रति लोगों में जागृति आ रही है। भले जागृति लाने वाले लोग शुरू में कम होते हैं लेकिन धीरे-धीरे यह कारवां बढ़ता जाता है। श्री परमार ने कहा कि जनजागृति के ऐसे आयोजनों से, आने वाले समय में पानी का सदुपयोग करने और उसे अनावश्यक खर्च करने को लेकर जनमानस के मध्य अनुशासन स्थापित होगा।

आरईसी ने अदानी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड को सौंपा ट्रांसमिशन एसपीव्ही

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश को आगामी दो से तीन वर्षों में दो चरणों में 1230 मेगावॉट विद्युत की अतिरिक्त उपलब्धता रहेगी। इसके लिये बिजली कंपनी के मुख्यालय जबलपुर में आरईसी ने अदानी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड को ट्रांसमिशन एसपीव्ही सौंपा। इस परियोजना के तहत मेसर्स महान एनर्जेन लिमिटेड के बंधौरा (सिंगरौली) पॉवर जनरेटिंग प्लांट से मध्यप्रदेश के हिस्से की 1230 मेगावॉट विद्युत निकासी के लिये ट्रांसमिशन नेटवर्क तैयार किया जाना है। एम.पी. ट्रांसको के मुख्य अभियंता श्री देवाशीष चक्रवर्ती ने बताया कि मध्यप्रदेश पॉवर मैनेजमेंट कंपनी ने 1230 मेगावॉट विद्युत प्रदाय हेतु मेसर्स महान एनर्जेन लिमिटेड से पॉवर परचेस अनुबंध किया था। मेसर्स महान एनर्जेन लिमिटेड द्वारा 2ङ्क800 मेगावॉट क्षमता के पॉवर जनरेटिंग प्लांट की स्थापना प्रस्तावित है। पॉवर प्लांट से मध्यप्रदेश के हिस्से की 1230 मेगावॉट विद्युत निकासी हेतु नियामक आयोग के विनियमानुसार टैरिफ आधारित प्रतिस्पर्धा बोली प्रक्रिया के अंतर्गत पारेषण अधोसंरचना के विस्तार हेतु मध्यप्रदेश पॉवर मैनेजमेंट कंपनी द्वारा मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी/एस.टी.यू. से अनुरोध किया गया था।

5.50 लाख पेंशनर्स की डीआर अटकाई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मप्र के 5.50 लाख पेंशनरों को महंगाई राहत (डीआर) देने में देरी का मामला हाई कोर्ट पहुंच गया है। छत्तीसगढ़ से सहमति लेने में देरी के कारण पेंशनरों को 14 महीने की डीआर का नुकसान हुआ। इस मामले में हाई कोर्ट की इंदौर बेंच ने मप्र के वित्त विभाग के प्रमुख सचिव को 5000 रुपए का जमानती वारंट जारी किया है। 3 दिन पहले (24 मार्च को) सिंगल बेंच में सुनवाई के बाद यह फैसला सुनाया गया।

संयुक्त विभाग पेंशनर्स संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष बालचंद्र वर्मा द्वारा दायर अवमानना याचिका पर सुनवाई के बाद यह फैसला आया। वर्मा ने बताया कि 1 जनवरी से डीआर के लिए मप्र सरकार ने छग से सहमति मांगी थी, लेकिन छग सरकार ने इसे 6 महीने बाद 1 जुलाई 2023 से मंजूरी दी। फिर 1 जुलाई 2023 से डीआर के लिए मप्र सरकार ने दोबारा सहमति मांगी, जिसे छग ने 1 मार्च 2024 से दी। इस देरी से पेंशनरों को डीआर का नुकसान हुआ। पेंशनरों के पक्ष में फैसला आया, लेकिन लागू नहीं हुआ - वर्मा ने छग के वित्त सचिव को चिट्ठी लिखकर पूछा कि देरी के लिए उनके खिलाफ अभियोजन क्यों न दायर किया जाए। इस पर जवाब नहीं मिला तो इंदौर बेंच में याचिका दायर की। 30 जुलाई 2024 को पेंशनरों के पक्ष में फैसला आया। फिर भी मप्र सरकार ने निर्णय नहीं लिया। इसी के चलते वर्मा ने 16 अक्टूबर 2024 को अवमानना याचिका दायर की। सुनवाई के दौरान मप्र सरकार की ओर से कोई जवाब पेश नहीं किया गया, जिसके बाद कोर्ट ने वित्त विभाग के प्रमुख सचिव के खिलाफ 5000 रुपए का जमानती वारंट जारी कर दिया। इस मामले की अगली सुनवाई 25 अप्रैल को होगी।

1230 मेगावॉट विद्युत पारेषण के लिये मध्यप्रदेश में बनेंगे दो 400 के.व्ही. के सबस्टेशन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश को आगामी दो से तीन वर्षों में दो चरणों में 1230 मेगावॉट विद्युत की अतिरिक्त उपलब्धता रहेगी, इस हेतु बिजली कंपनी के मुख्यालय जबलपुर में आर.ई.सी. ने अदानी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड को ट्रांसमिशन एस.पी.व्ही. सौंपा। इस परियोजना के तहत मेसर्स महान एनर्जेन लिमिटेड के बंधौरा (सिंगरौली) पावर जनरेटिंग प्लांट से मध्यप्रदेश के हिस्से की 1230 मेगावॉट विद्युत निकासी के लिये ट्रांसमिशन नेटवर्क तैयार किया जाना है।

एम.पी. ट्रांसको के मुख्य अभियंता श्री देवाशीष चक्रवर्ती ने बताया कि मध्यप्रदेश पावर मैनेजमेंट कंपनी ने 1230 मेगावॉट विद्युत प्रदाय हेतु मेसर्स महान एनर्जेन लिमिटेड से पॉवर परचेस अनुबंध किया था, उक्त हेतु मेसर्स महान एनर्जेन लिमिटेड द्वारा 2ङ्क800 मेगावॉट क्षमता के पावर जनरेटिंग प्लांट की स्थापना प्रस्तावित है। उक्त पावर प्लांट से मध्यप्रदेश के हिस्से की 1230 मेगावॉट विद्युत निकासी के लिये नियामक आयोग के विनियमानुसार टैरिफ आधारित प्रतिस्पर्धा बोली प्रक्रिया के अंतर्गत पारेषण अद्योसंरचना के विस्तार हेतु मध्यप्रदेश पावर मैनेजमेंट कंपनी द्वारा मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी/एस.टी.यू. से अनुरोध किया गया था। इसके तहत शासन ने निविदा प्रक्रिया समन्वयक (बी.पी.सी.) के लिये आर.ई.सी.पी.डी.सी.एल. (आरईसी पावर डेवलपमेंट एंड कंसलटेंसी लिमिटेड) को नियुक्त किया। टैरिफ आधारित प्रतिस्पर्धा बोली (टी.बी.सी.बी) में मेसर्स अदानी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड ने 2000 करोड़ रूपये की इस परियोजना को अन्य बिडर्स के मध्य न्यूनतम दर के आधार पर हासिल करने में सफलता प्राप्त की।

हनुमान जयंती मेले के लिए स्पेशल ट्रेन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। हनुमान जयंती मेला 2025 के अवसर पर यात्रियों की सुविधा और अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुए पश्चिम मध्य रेलवे, भोपाल मंडल द्वारा भोपाल-इटावा-भोपाल अनारक्षित मेला स्पेशल ट्रेन (01601/01602) चलाई जा रही है। इस विशेष ट्रेन का संचालन कुल 7 फेरे में किया जाएगा। यह ट्रेन भोपाल से 30 मार्च, 01, 3, 5, 7, 10 एवं 12 अप्रैल 2025 को और इटावा से भी इन्हीं तारीखों पर चलाई जाएगी। रेलवे ने यात्रियों से अनुरोध किया है कि किसी भी असुविधा से बचने के लिए रेलवे की अधिकृत पूछताछ सेवा ट्रेन की सही स्थिति की जानकारी लें। विस्तृत समय-सारणी और ठहराव की जानकारी के लिए गाड़ी संख्या 01601 ट्रेन भोपाल स्टेशन से सुबह 04ः50 बजे प्रस्थान करेगी।

शैक्षणिक चुनौतियों और समाधान पर शिक्षाविदों ने किया चिंतन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल के निर्देश पर आयोजित कर्मयोगी बनें कार्यशाला का चिंतन सांसारिक जगत के आध्यात्मिक कल्याण के समागम के महाकुम्भ के समान शैक्षणिक व्यवस्था की चुनौतियों और समाधान के कुम्भ के रूप में उभरा। कार्यशाला में कर्मयोगी शिक्षा व्यवस्था के लिए प्रदेश के 78 सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों के कुलगुरु, कुलपति, कुल सचिव, प्राचार्य पी.एम एक्सीलेंस और स्वशासी महाविद्यालय के शिक्षाविदों के मध्य संवाद की अभूतपूर्व पहल हुई। समापन कार्यक्रम में राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव श्री के.सी. गुप्ता ने शिक्षाविदों को स्मृति प्रतीक प्रदान किए। कार्यशाला के तकनीकी सत्र के प्रथम वक्ता के रूप में मानव संसाधन क्षमता निर्माण आयोग और मिशन कर्मयोगी भारत सरकार के सदस्य प्रो. आर. बालासुब्रह्मण्यम ने चुनौतियों को अवसर में बदलना- प्रेरक शैक्षणिक नेतृत्व के लिए एक कर्मयोगी का दृष्टिकोण विषय पर विचार रखे। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय और शैक्षणिक संस्थाओं को विद्यार्थी कल्याण और हितों पर केंद्रित होना चाहिए। संस्थान बच्चों के हित में रूल्स बनाए। इन नियमों का क्रियान्वयन भी विद्यार्थियों के हितों को ध्यान में रखकर ही किया जाए। प्रो. बालासुब्रह्मण्यम विद्यार्थियों की क्षमताओं का निर्माण भविष्य की आवश्यकता के लक्ष्य अनुसार किया जाए। रिपीटेटिव की जगह रिफ्लेक्टिव एजुकेशन पर ज़ोर देते हुए कॉम्पिटिटिव और कोलेबोरेटिव तकनीक का इस्तेमाल कर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को निखारें। उन्होंने कहा कि अध्यापन के दौरान शिक्षक, विद्यार्थी अपेक्षाओं के अनुरूप खुद की तैयारी करें। प्रभावी अध्यापन के लिए तकनीक का प्रभावी इस्तेमाल करें, समय के साथ होने वाले तकनीकी अपडेशन से परिचित रहें। प्रो. बालासुब्रह्मण्यम ने कहा कि विश्वविद्यालयों को विकसित भारत बनाने के लिए लीडर्स प्रोवाइडर बनना होगा। बिज़नेस एटिट्यूड के बजाए एकेडमिक एटीट्यूड पर काम करना होगा। विषय की शाखाओं के अनुसार ही अध्यापकों का चयन किया जाए।

लोक निर्माण मंत्री सिंह के नेतृत्व में अध्ययन दल ने किया अयोध्या में सरयू नदी पर घाटों का भ्रमण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह ने आज अयोध्या में सरयू नदी पर बने घाटों का भ्रमण किया। इस दौरान सड़क विकास निगम के प्रबंध संचालक श्री भरत यादव, विभागीय सलाहकार समिति के सदस्य श्री प्रशांत पोल, विशेष सहायक श्री राहुल सिंह राजपूत, मुख्य अभियंता श्री गोपाल सिंह, स्थानीय प्रशासन के अधिकारी एवं डीपीआर तैयार करने वाली एजेंसी के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

मंत्री श्री सिंह के नेतृत्व में अध्ययन दल ने सरयू नदी पर नवनिर्मित घाटों की स्थापत्य कला, रामपथ, राम की पैड़ी, पार्किंग व्यवस्था, सौंदर्यीकरण, म्यूरल वर्क और पर्यटकों व श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए की गई व्यवस्थाओं का सूक्ष्म निरीक्षण किया। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर अयोध्या में से मुख्य अभियंता श्री राजेश कुमार, सरयू नहर डिवीजन के कार्यपालन यांत्रिक श्री पारस नाथ एवं लोक निर्माण विभाग के कार्यपालन यंत्री श्री एसपी भारती ने मंत्री श्री राकेश सिंह को सरयू नदी के तट पर नवनिर्मित घाटों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। भ्रमण के दौरान इन अधिकारियों ने सरयू तट पर पर्यटकों के लिए विकसित सुविधाओं, श्रद्धालुओं के लिए निर्मित व्यवस्थाओं, भगवान राम के जीवन से जुड़ी घटनाओं को सचित्र रूप से दिखाने के लिए निर्मित म्यूरल वाल्स पर विस्तार से जानकारी दी। मंत्री श्री सिंह ने भ्रमण के दौरान सड़क विकास निगम के अधिकारियों एवं डीपीआर बनाने वाली एजेंसी से कहा कि जबलपुर में नर्मदा नदी किनारे बनने वाले घाट धार्मिक, सांस्कृतिक और पर्यटक सुविधाओं के आदर्श मॉडल के रूप में विकसित किए जाएं। उन्होंने यह भी कहा कि घाटों के निर्माण में माँ नर्मदा की गरिमा, श्रद्धालुओं की आस्था और पर्यावरणीय संतुलन का विशेष ध्यान रखा जाए। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जबलपुर में नर्मदा नदी किनारे सरयू की तर्ज पर घाटों के निर्माण की घोषणा की थी। मंत्री श्री राकेश सिंह ने इस महत्वाकांक्षी परियोजना की डीपीआर तैयार करने मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम को दायित्व सौंपा है। अब तक तैयार योजना एवं विभिन्न स्तर पर हुए विचार विमर्शों के आधार पर मंत्री श्री सिंह ने बताया कि नर्मदा नदी के किनारे जबलपुर के प्रमुख घाटों के सौंदर्यीकरण और विकास को लेकर एक व्यापक योजना तैयार की जा रही है। इस योजना के तहत घाटों के बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई सुविधाएं विकसित की जाएंगी। प्रस्तावित योजना के तहत तिलवारा घाट और कालीधाम घाट पर नाव टर्मिनल स्थापित करने की योजना है।

पक्षियों के लिए सकोरे बांटे, पौधे लगाए; फूलों की होली और पूल पार्टी का आनंद लिया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के जैन सोशल ग्रुप चंदन वाला ने रातीबड़ स्थित निजी रिसोर्ट में होली मिलन समारोह का आयोजन किया। कल्पना के.एल. जैन की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम की शुरुआत पर्यावरण संरक्षण के प्रयास से हुई। समूह ने पक्षियों के लिए दाना-पानी रखने के लिए सकोरों का वितरण किया। होली में लकड़ियों के जलने से होने वाले पर्यावरण नुकसान की भरपाई के लिए पौधरोपण भी किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न आकर्षक प्रॉप्स के साथ फूलों की होली का आनंद लिया गया। राधा-कृष्ण की होली, कपल गेम्स और होली थीम पर तंबोला जैसी मनोरंजक प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं। समारोह में आईडी अमर जैन, संस्थापक अध्यक्ष सुषमा गंगवाल, पूर्व अध्यक्ष सुधा काला और सचिव अंजना रावत सहित कई पदाधिकारी मौजूद रहे। श्री 1008 भगवान आदिनाथ जयंती की

पूर्व संध्या पर भजन प्रस्तुत करने वाले सदस्यों को पुरस्कृत किया गया। पिछले साल की कार्यकारिणी के सभी सदस्यों और पदाधिकारियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में सदस्यों ने पूल पार्टी का आनंद लिया और स्वादिष्ट भोजन के साथ अगली मुलाकात का वादा करते हुए विदा ली।

अवधपुरी में 24 कुंडी गायत्री महायज्ञ की तैयारी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के अवधपुरी में आयोजित होने वाले 24 कुंडीय गायत्री महायज्ञ की तैयारियां जोरों पर हैं। यह आध्यात्मिक अनुष्ठान 18 से 21 अप्रैल तक चलेगा। महायज्ञ की तैयारियों के तहत रीगल टाउन में दीपयज्ञ का आयोजन किया गया। इसके बाद प्रगति नगर में गीता सक्सेना के निवास पर कार्यकर्ताओं की एक बैठक हुई। जिसमें गजानंद घिघोड़े ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया।

कार्यकर्ताओं ने जनसंपर्क अभियान को और प्रभावी बनाने का संकल्प लिया है। वे गली-गली और घर-घर जाकर श्रद्धालुओं को यज्ञ का महत्व समझा रहे हैं। स्वयंसेवकों की टीम विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार कर रही है। आयोजकों का कहना है कि गायत्री महायज्ञ से पर्यावरण का शोधन होता है। साथ ही यह मानव की आध्यात्मिक उन्नति और सुख-सौहार्द का मार्ग भी प्रशस्त करता है। उन्होंने श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का आग्रह किया है।

यह आयोजन अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज के मार्गदर्शन में होगा। गायत्री परिवार ट्रस्ट बरखेड़ा इस चार दिवसीय अनुष्ठान का संचालन करेगा।

उप मुख्यमंत्री ने ग्राम पंचायत लोही के विभिन्न निर्माण कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया

प्राथमिकता से कराये जा रहे जनकल्याण व विकास के कार्य

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि जनकल्याण और विकास के कार्य प्राथमिकता से कराये जा रहे हैं। रीवा को पहले लोग पिछड़ा कहते थे अब इसके विकास की चर्चा प्रदेश एवं देश में हो रही है। शुक्ल ने ग्राम पंचायत लोही में विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण किया। उन्होंने सामुदायिक भवन निर्माण, आंगनवाड़ी भवन, हाट बाजार निर्माण सहित विभिन्न कार्यों का भूमिपूजन किया। शुक्ल ने एक करोड़ 88 हजार रूपये की लागत से जोरी वाया भड़री तालाब रोड़ का लोकार्पण किया। उन्होंने माध्यमिक विद्यालय भवन सहित अन्य निर्माण कार्यों का लोकार्पण किया।

ग्राम पंचायत लोही में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शुक्ल ने कहा कि प्रदेश में महिलाओं, किसानों व युवाओं के कल्याण के लिए योजनाएं संचालित की जा रही हैं। अधोसंरचना विकास के कार्य प्राथमिकता से कराये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि गड्डी रोड से नहर के किनारे गुढ़ रोड को मिलाने वाले मार्ग को 7 करोड़ रूपये की लागत से बनाया जायेगा। जो गुढ़ रोड के लिए इससे संबद्ध ग्रामों के लिए बाईपास का काम करेगा। शुक्ल ने कहा कि लोही लक्ष्मणपुर मार्ग को खेमसागर मंदिर तक चौड़ा बनाया जायेगा तथा शेष मार्ग को पर्याप्त चौड़ाई के बनाने के निर्देश उन्होंने निर्माण विभाग को दिये। शुक्ल ने ग्राम पंचायत लोही के सरपंच द्वारा की गयी मांगों को प्राथमिकता से पूरे किये जाने हेतु आश्वस्त किया। उप मुख्यमंत्री जल संचय, जनभागीदारी, जनआन्दोलन कार्यक्रम में भी शामिल हुए। उन्होंने कहा कि रीवा में बोर के माध्यम से संचयित जल को जमीन के अंदर पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है ताकि भूजल स्तर बना रहे। उन्होंने प्रदेश सरकार द्वारा 30 मार्च से आरंभ हो रहे जल गंगा संवर्धन अभियान में सहभागी बनने का ग्रामवासियों से आहवान किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल ने रीवा के विकास के लिए उप मुख्यमंत्री जी को साधुवाद दिया। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार महिलाओं के सम्मान के लिए कार्य कर रही है। इससे पूर्व सरपंच नीलेश तिवारी ने विभिन्न मांगों की ओर उप मुख्यमंत्री जी का ध्यान आकृष्ट किया। इस अवसर पर मुख्य अभियंता पीडब्ल्यूडी संजय खाण्डे ने लोकार्पित सड़क का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में प्रेमप्रकाश पाण्डेय, भूपेन्द्र सिंह सहित बड़ी संख्या में लोही तथा आसपास के ग्रामों के ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

रुद्र सोनी एवं स्वर्णिका पांडे ने किया टॉप

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा आयोजित कक्षा पांचवी की परीक्षा में विंध्य पब्लिक हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्र रुद्र सोनी ने 400 के पूर्णांक में 367 अंक अर्जित कर विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया और विहान द्विवेदी 330 अंक के साथ द्वितीय स्थान एवं आकांक्षा मिश्रा ने 306 अंक के साथ तृतीय स्थान प्राप्त किया द्य वहीं कक्षा आठवीं में स्वर्णिका पांडे 600 के पूर्णांक में 528 अंक अर्जित कर विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया और प्रतीक्षा तिवारी 515 अंक के साथ द्वितीय स्थान एवं कृष्ण नारायण पाठक ने 514 अंक के साथ तृतीय स्थान प्राप्त किया द्य विद्यालय में अध्ययनरत समस्त छात्रों का उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा।

वेदप्रकाश के प्रयास से नौबस्ता पंचायत भवन की हुई स्वीकृत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले के जनपद पंचायत त्यौंथर अंतर्गत ग्राम पंचायत नौबस्ता में नवीन पंचायत भवन के निर्माण का भूमि पूजन किया गया इस कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्राम पंचायत नौबस्ता की सरपंच गेंदकाली प्रजापति ने किया एवं मुख्य अतिथि त्यौंथर जनपद पंचायत के सीईओ राहुल पांडे रहे तथा विशिष्ट अतिथि वार्ड क्रमांक 4 के जनपद सदस्य वेद प्रकाश तिवारी रहे।भूमि पूजन के दौरान सीईओ राहुल पांडे ने कहा कि पंचायत भवन की स्वीकृति जनपद सदस्य वेद प्रकाश तिवारी जी के अथक प्रयासों के बाद हुई है । कार्यक्रम में उपस्थित अन्य गणमान्य नागरिकों में युवा मोर्चा मंडल अध्यक्ष गढ़ी जैनेंद्र मिश्रा नौबस्ता ग्राम पंचायत की पूर्व सरपंच कौशल्या देवी आदिवासी, पूर्व सरपंच राजबिहारी केवट , नीरज पांडे रवि प्रजापति सहित अन्य लोग मौजूद रहे कार्यक्रम के दौरान अपने उद्बोधन में जनपद सदस्य वेद प्रकाश तिवारी ने निर्माण एजेंसी से कार्य को गुणवत्ता पूर्ण करने की अपील की है।

मऊगंज के दो लापरवाह अधिकारी निलंबित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। आयुक्त नगरीय प्रशासन एवं विकास सिबी चक्रवर्ती एस ने प्रभारी मुख्य नगर पालिका अधिकारी मऊगंज महेश पटेल तथा उपयंत्री राजेश प्रताप सिंह को तत्काल प्रभाव से निलंबित करने के आदेश दिये हैं। सीएम हेल्पलाइन तथा समाधान आनलाइन के एजेण्डा बिन्दु पर लंबित प्रकरण में कार्यवाही करने में लापरवाही बरतने पर यह कार्यवाही की गयी है।

इस संबंध में कलेक्टर मऊगंज संजय कुमार जैन ने बताया कि निलंबन अवधि में सीएमओ पटेल तथा उपयंत्री सिंह का मुख्यालय संयुक्त संचालक नगरीय प्रशासन कार्यालय रीवा रहेगा। इन्हें नियमानुसार जीवन निर्वाह भत्ता दिया जायेगा। कलेक्टर ने बताया कि सीएम हेल्पलाइन में सुनील कुमार साहू निवासी वार्ड क्रमांक एक मऊगंज ने उनकी कालोनी में तीन माह से पानी की आपूर्ति की शिकायत की थी। वर्ष 2018 में पानी की नई पाइप लाइन बिछाने के लिए किये जा रहे निर्माण कार्य के दौरान कालोनी की पाइप लाइन क्षतिग्रस्त हो गयी थी। आवेदन द्वारा नगर परिषद कार्यालय में पाइप लाइन के सुधार तथा पानी की आपूर्ति के लिए कई बार आवेदन दिया गया लेकिन उस पर कोई कार्यवाही की गयी। निर्माण कार्यों में लापरवाही बरतने के कारण कालोनी की पेयजल आपूर्ति प्रभावित हुई। इसे गंभीर लापरवाही मानते हुए मुख्य नगर पालिका अधिकारी तथा उपयंत्री के विरूद्ध निलंबन की कार्यवाही की गयी है।

कलेक्टर ने कहा है कि मऊगंज जिले के सभी अधिकारी सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों का तत्परता और संवेदनशीलता से निराकरण करें। समाधान आनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं में लंबित सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों तथा 50 दिन से अधिक समय से लंबित प्रकरणों पर विशेष ध्यान दें। सभी अधिकारी संतुष्टिपूर्वक प्रकरण निराकृत करके अपने विभाग और जिले की ग्रेडिंग में सुधार करें। प्रकरणों के निराकरण के लिए आवेदक से स्वयं चर्चा करें। किसी भी प्रकरण को कार्यवाही अधूरी रहने पर फोर्स क्लोज न करें। प्रकरणों के निराकरण में लापरवाही बरतने पर कार्यवाही होना सुनिश्चित है।

मऊगंज में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का तीन दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा आंगनवाड़ी केन्द्र में पांच साल से अधिक आयु के दर्ज बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिए पोषण भी पढ़ाई भी अभियान चलाया जा रहा है। इस पोषण की पढ़ाई भी अभियान का तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन परियोजना कार्यालय, महिला एवं बाल विकास मऊगंज में किया गया। सक्षम आंगनबाड़ी एवं पोषण 2.0 पोषण भी पढ़ाई भी कार्यक्रम के तहत आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और विकास के क्षेत्र की जानकारी दी गई आधार प्रशिक्षण 1000 दिवस गर्भावस्था से लेकर बच्चों के दो वर्ष तक पोषण एवं स्वास्थ्य देखभाल की निगरानी करना बताया गया। नव चेतना बच्चे के जीवन की प्रारंभिक उत्तेजना यदि बच्चे को सही दिशा दी जाए उसके घर का माहौल अच्छा रहे तो बच्चों का विकास सही दिशा में हो सकेगा सामुदायिक सहभागिता एवं देखभाल को टेक्नोलॉजी के माध्यम से जानकारी आंगनवाड़ी कार्यकर्ता को दी गयी। आयोजित प्रशिक्षण की निगरानी के लिए संचलनालय भोपाल से उपसंचालक बृजेश शिवहरे परियोजना अधिकारी रीवा शहरी जीवेन्द्र सिंह उपस्थित रहे। जिला कार्यक्रम अधिकारी प्रवेश मिश्रा द्वारा प्रशिक्षण में शामिल आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को अपने क्षेत्र में नवीन निर्देशानुसार कार्य करने के लिए निर्देशित किया गया। मास्टर ट्रेनर पर्यवेक्षक श्वेता सोनी मंजू पांडे एवं सरोज साकेत द्वारा पावरप्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से एक एक विषय की गंभीरता को समझाते हुए प्रशिक्षण दिया गया हर एक प्रशिक्षण की पृथक से गतिविधि कराई गई। परियोजना अधिकारी निर्मला शर्मा द्वारा 24 से लेकर 29 तक तीन बैच आयोजित प्रशिक्षण की सम्पूर्ण व्यवस्था के साथ-साथ प्रतिभागियों को प्रशिक्षण भी दिया गया निर्देशित किया गया कि पोषण अभियान के उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अपने क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा समुदाय की सहभागिता के लिए मंगल दिवस की गतिविधि आयोजित करें जन भागीदारी के उद्देश्य से अक्षय पात्र का उपयोग करें टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए प्रत्येक बच्चे की स्क्रीनिंग करें ताकि कोई भी पात्र बच्चा सेवाओं से वंचित न रहे और बच्चे की देखभाल भी सही समय पर हो सके।

ई-पंजीयन के लिए संपदा वन पोर्टल एक अप्रैल से होगा बंद

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जमीनों तथा संपत्तियों का ई-पंजीयन संपदा पोर्टल के माध्यम से किया जाता है। वर्तमान में संपदा एक तथा संपदा 2 पोर्टल कार्य कर रहे हैं। शासन के निर्देशों के अनुसार 31 मार्च को संपदा एक पोर्टल पूरी तरह से बंद कर दिया जायेगा। अब ई-पंजीयन की समस्त कार्यवाहियां केवल संपदा 2 पोर्टल पर ही होगीं। इस संबंध में जिला पंजीयक संध्या सिंह ने बताया कि एक अप्रैल के बाद संपदा एक से जुड़े बेल्डरों को कोई नवीन लायसेंस जारी नहीं किये जायेंगे। यदि कोई दस्तावेज संपदा एक पोर्टल में तैयार कर लिये गये हैं तो उसे 31 मार्च तक संपदा 2 पोर्टल में हस्तांरित कर दें। संपदा एक पोर्टल से नवीन क्रेडिट लिमिट लेने की सुविधा बिल्डर्स को 30 मार्च को बंद कर दी जायेगी। शासन के निर्देशों के अनुसार संपदा एक से पंजीकृत दस्तावेजों की हार्ड कापी देने से पहले पंजीयक कार्यालय सभी दस्तावेजों में फोटो, हस्ताक्षर, नक्शे आदि का सत्यापन करेगा। एक अप्रैल के बाद संपदा एक में दर्ज दस्तावेज संपदा 2 पोर्टल में हस्तांरित नहीं हो पायेंगे।

उप मुख्यमंत्री ने नव संवत्सर, चेटीचंद और गुड़ी पड़वा की शुभकामनाएं दीं

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने प्रदेशवासियों को नव संवत्सर, चेटीचंद और गुड़ी पड़वा की शुभकामनाएं दीं हैं। उन्होंने कहा कि ये पर्व हमारी सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक हैं और समाज में नई ऊर्जा का संचार करते हैं। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में विक्रमोत्सव-2025 का भव्य आयोजन 30 मार्च को गुड़ी पड़वा से प्रारंभ होगा। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि विक्रमोत्सव का आयोजन युवा पीढ़ी को सम्राट विक्रमादित्य के सिद्धांतों से प्रेरणा लेने की सीख देगा। इसी दिन से जल गंगा अभियान भी प्रदेशभर में शुरू होगा, जो 3 महीने तक चलेगा। उन्होंने कहा कि विक्रमोत्सव यह आयोजन हमारी सांस्कृतिक विरासत को सहेजने और विक्रमादित्य के आदर्शों को आत्मसात करने की स्वर्णिम पहल है।

जिले में स्कूल चलें हम अभियान एक से 4 अप्रैल तक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। प्रदेश के साथ-साथ में जिले में भी नवीन शिक्षण सत्र वर्ष 2025-26 की शुरूआत एक अप्रैल से स्कूल चलें हम अभियान के रूप में की जायेगी। अभियान के दौरान एक से चार अप्रैल तक प्रतिदिन शालाओं में कार्यक्रम आयोजित होंगे। इस संबंध में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने स्कूल शिक्षा विभाग के अधिकारियों को दिशा-निर्देश जारी किये हैं। अभियान के दौरान सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों के नामांकन पर विशेष ध्यान दिया जायेगा।

जिला-शाला स्तरीय प्रवेशोत्सव कार्यक्रम चयनित शाला में होगा। कार्यक्रम में सांसद, विधायक एवं अन्य जन-प्रतिनिधि शामिल होंगे। उपस्थित छात्र-छात्राओं को निःशुल्क पाठ्य-पुस्तकें वितरित की जायेंगी। स्कूल शिक्षा विभाग ने ऐसी व्यवस्था की है कि नये शैक्षणिक सत्र की शुरूआत में विद्यार्थियों को पाठ्य-पुस्तकें मिल जायें। इस संबंध में जिला शिक्षा अधिकारी और मैदानी अमले को विभाग द्वारा निर्देश जारी कर दिये गये हैं। ग्राम और बसाहट के शाला से बाहर रहे चिन्हित बच्चों का शाला में नामांकन कराया जायेगा। बच्चों के अभिभावकों का शाला स्तर पर स्वागत किया जायेगा। कक्षा-1 से 8 तक सभी शालाओं में एक अप्रैल को बालसभा का आयोजन किया जायेगा। इस दिन शालाओं में विशेष भोजन की व्यवस्था भी की गयी है।

स्कूल चलें हम अभियान के दूसरे दिन शालाओं में "भविष्य से भेंट" कार्यक्रम होगा। इस कार्यक्रम में समाज के विभिन्न क्षेत्रों के प्रसिद्ध, प्रबुद्ध और सम्मानित व्यक्तियों को एक प्रेरक की भूमिका में विद्यार्थियों से भेंट के लिये आमंत्रित किया जायेगा। इसी दिन स्थानीय स्तर पर विशिष्ट उपलब्धियाँ हासिल करने वाले खिलाड़ी, साहित्यकार, कलाकार, मीडिया, संचार मित्रों, पुलिस अधिकारी, राज्य शासन के अधिकारी को विशेष रूप से आमंत्रित किया जायेगा। आमंत्रित अतिथि उपस्थित बच्चों को पढ़ाई के महत्व और प्रेरणादायी कहानियाँ सुनायेंगे। इस दौरान सामाजिक संस्था एवं आमंत्रित व्यक्ति स्वैच्छा से विद्यार्थियों को शाला उपयोगी वस्तुएँ भेंट कर सकेंगे। जिले के प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के अधिकारियों को किसी एक शाला में जाकर एक कालखण्ड में बच्चों के साथ संवाद करने के लिये संवाद करने के भी निर्देश दिये गये हैं।

"स्कूल चलें हम अभियान" के अंतर्गत 3 अप्रैल को शाला स्तर पर पालकों के साथ सांस्कृतिक एवं खेल-कूद की गतिविधियाँ आयोजित की जायेंगी। इसका उद्देश्य पालकों का विद्यालय से जुड़ाव करना है। इसी दिन शाला में उपस्थित पालकों को शैक्षणिक स्टॉफ द्वारा राज्य सरकार की स्कूल शिक्षा से जुड़ी सरकारी योजनाओं की जानकारी दी जायेगी। पिछले शैक्षणिक सत्र में जिन विद्यार्थियों की 85 प्रतिशत से अधिक उपस्थिति रही है, उनके पालकों को सभा में सम्मानित किया जायेगा। "स्कूल चलें हम अभियान" के अंतर्गत 4 अप्रैल को ऐसे छात्रों को चिन्हित किया जायेगा, जो किन्हीं वजहों से कक्षोन्नति प्राप्त करने में असफल हो गये हैं। पालकों को इन बच्चों की आगे की पढ़ाई के लिये समझाइश दी जायेगी। उन्हें बताया जायेगा कि असफल होने के बाद भी लगातार प्रयास से अच्छा भविष्य तैयार किया जा सकता है।

पोषण भी, पढ़ाई भी कार्यक्रम के अंतर्गत आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग के अंतर्गत जिले में संचालित समस्त आंगनवाड़ी केन्द्रों की आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को भारत सरकार के मिशन सक्षम आंगनवाडी एवं पोषण 2.0 के अंतर्गत पोषण भी, पढ़ाई भी कार्यक्रम के तहत तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। कलेक्टर रानी बाटड़ के निर्देशन में जिले के सभी बाल विकास परियोजना अधिकारियों द्वारा बतौर कोर्स डायरेक्टर प्रशिक्षण सत्रों का सफलतापूर्वक संचालन निपसिड इंदौर से प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर्स के रूप मे समस्त पर्यवेक्षकों के सहयोग से भलीभांति किया गया।

पोषण भी, पढ़ाई भी कार्यक्रम के तहत आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को कुपोषण की पहचान, कारण, वृद्धि निगरानी, समुदाय की भागीदारी एवं पोषण प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी गई। जीवन के प्रथम 1000 दिवस के महत्व को रेखांकित करते हुए गर्भावस्था मे देखभाल, स्तनपान और सही पोषण से शारीरिक और मानसिक विकास के साथ ही संज्ञानात्मक, मनोवैज्ञानिक और भाषाई विकास मे परिवार और समुदाय के साथ ही आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रभावी भूमिका निर्वहन के लिए प्रशिक्षण देकर तैयार किया गया है। आंगनवाड़ी केन्द्रों में प्रारंभिक बाल्यावस्था, देखभाल और शिक्षा के लिए खेल आधारित गतिविधियां और साप्ताहिक खेल आधारित कैलेंडर पर जोर दिया गया है। पोषण घटक में संतुलित आहार और सूक्ष्म पोषक तत्वों का महत्व, बच्चों के लिए पोषण आहार तैयार करना, व्यक्तिगत स्वच्छता और साफ सफाई, आहार दिशा-निर्देश, विकास की निगरानी और पोषण ट्रेकर उल्लेखनीय है। प्रशिक्षण मे दिव्यांगता की शीघ्र पहचान कर विशेष प्रयास और जरूरी सेवाओं सहित अनेक विषयों पर आडियो-वीडियो के माध्यम से आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया गया।

पूरे प्रदेश मे एक साथ प्रारंभ हुए इस प्रशिक्षण की राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर से सतत मानीटरिंग हेतु विभाग द्वारा आब्जर्वर नियुक्त किये गए। मैहर जिले में भारत सरकार के निपसिड इंदौर से सहायक संचालक भूपेंद्र डाडी तथा संचालनालय महिला एवं बाल विकास भोपाल से सहायक संचालक आनंद शिवहरे सहित स्थानीय अधिकारियों द्वारा जिले की सभी परियोजनाओं मे आयोजित प्रशिक्षण स्थलों का भ्रमण किया गया।

वृद्धाश्रम में विधिक सेवा शिविर संपन्न

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा वृद्धाश्रम रीवा में विधिक सेवा शिविर का आयोजन किया गया। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश राकेश मोहन प्रधान के मार्गदर्शन में आयोजित शिविर का शुभारंभ जिला न्यायाधीश सुधीर सिंह राठौर ने किया। इस अवसर पर न्यायाधीश ने कहा कि वरिष्ठ नागरिक हमारे परिवार और समाज के आभूषण हैं उनके पास जीवन के अनुभावों की पूजी है। अपने माता-पिता और परिवार तथा समाज के हर वरिष्ठ नागरिक का सम्मान करना हमारा नैतिक दायित्व है। वृद्धाजनों की सेवा ईश्वर की सेवा है उनके आशीर्वाद से ही हमारे घर परिवार में सुख समृद्धि आती है। शिविर में न्यायाधीश यशपाल सिंह ने कहा कि बुजुर्ग अपने अनुभव और ज्ञान से नई पीढ़ी को भविष्य की राह दिखाते हैं। उनका मार्गदर्शन हमें सही पथ पर चलना सिखाता है। शिविर में जिला विधिक सहायता अधिकारी अभय कुमार मिश्रा ने वृद्धजनों के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा दी जा रही निःशुल्क कानून सहायता की जानकारी दी। शिविर में मंजूर अहमद अंसारी ने वृद्धजनों की स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान तथा आनंद पाण्डेय ने विधिक समस्याओं के निदान के संबंध में जानकारी दी। शिविर में पैरालिगल वालेंटियर समीर असलम, राघवेन्द्र सिंह तथा वृद्धाश्रम के सभी वृद्धजन उपस्थित रहे।

पचमठा में आज विक्रम नववर्ष का होगा मुख्य आयोजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। विक्रम संवत 2082 का प्रथम दिन चैत्र प्रतिपदा नववर्ष उत्सव 30 मार्च को मनाया जाएगा। इस दिन मुख्य आयोजन पचमठा में सुबह 10 बजे से आरंभ होगा। समारोह के मुख्य अतिथि सांसद जनार्दन मिश्र होंगे। इस संबंध में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने बताया कि समारोह में सबसे पहले ब्राह्ध्वज वंदन किया जाएगा। इसके बाद विक्रम संवत शुरू होने के इतिहास के संबंध में जानकारी दी जाएगी। समारोह में मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के दल द्वारा सम्राट विक्रमादित्य नाटिका का मंचन किया जाएगा। इसके बाद समारोह के मुख्य अतिथि सांसद मिश्र का उद्बोधन होगा। नववर्ष के प्रथम दिन प्रमुख मंदिरों एवं शासकीय भवनों में ब्राह्ध्वज स्थापित किए जाएंगे। कलेक्टर ने आमजनता से विक्रम नववर्ष समारोह में भागीदारी का अनुरोध किया है।

उप मुख्यमंत्री जायेंगे जबलपुर और हरदा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल 30 मार्च को सुबह 9 बजे कार द्वारा प्रस्थान कर दोपहर 12 बजे जबलपुर पहुंचेगे। उप मुख्यमंत्री जबलपुर में एसोसियेशन आफ फिजिशियन आफ इंडिया द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। उप मुख्यमंत्री दोपहर 1.30 बजे जबलपुर से कार द्वारा प्रस्थान कर शाम 6 बजे हरदा पहुंचेगे। हरदा में शाम 7 बजे विक्रम नववर्ष कार्यक्रम में शामिल होंगे तथा बघेल हास्पिटल एवं रिसर्च सेंटर में कैथलैब का शुभारंभ करेंगे। उप मुख्यमंत्री हरदा से रात 8.30 बजे प्रस्थान कर भोपाल पहुंचकर रात्रि विश्राम करेंगे।

विचार

अन्य देशों में रह रहे हिंदूओं के साथ खड़े रहने की जरूरत

आज लगभग 4 करोड़ से अधिक भारतीय मूल के नागरिक विश्व के अन्य देशों में शांतिपूर्ण तरीके से रह रहे हैं एवं इन देशों की आर्थिक प्रगति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। कई देशों में तो भारतीय मूल के नागरिक इन देशों के राजनैतिक पटल पर भी अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रहे हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, आदि विकसित देश इसके प्रमाण हैं। आस्ट्रेलिया में तो भारतीय मूल के नागरिकों को राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय करने के गम्भीर प्रयास स्थानीय स्तर पर किए जा रहे हैं, क्योंकि अन्य देशों में भारतीय मूल के नागरिकों की इस क्षेत्र में सराहनीय भूमिका सिद्ध हो चुकी है। राजनैतिक क्षेत्र के अतिरिक्त आर्थिक क्षेत्र में भी भारतीय मूल के नागरिकों ने अपनी उपयोगिता सिद्ध की है जैसे अमेरिका के सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में आज भारतीयों का ही बोलबाला है। अमेरिका में प्रतिवर्ष लगभग 85,000 एच वन-बी वीजा जारी किए जाते हैं, इसमें से लगभग 60,000 एच वन-बी वीजा भारतीय मूल के नागरिकों को जारी किए जाते हैं। इसी प्रकार अमेरिका की प्रमुख बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के मुख्य कार्यपालन अधिकारी भारतीय मूल के नागरिक बन रहे हैं। आज अमेरिका एवं ब्रिटेन में प्रत्येक 7 चिकित्सकों में 1 भारतीय मूल का नागरिक हैं। न केवल उक्त वर्णित विकसित देशों बल्कि खाड़ी के देशों यथा, बहरीन, कुवैत, ओमान, कतर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात में भी भारतीय मूल के नागरिक भारी संख्या में शांतिपूर्ण तरीके से रह रहे हैं एवं इन देशों के आर्थिक विकास में अपनी प्रभावशाली भूमिका निभा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, कई देशों यथा सिंगापुर, गुयाना, पुर्तगाल, सूरीनाम, मारीशस, आयरलैंड, ब्रिटेन, अमेरिका आदि के राष्ट्राध्यक्ष (प्रधानमंत्री अथवा राष्ट्रपति/उपराष्ट्रपति) भारतीय मूल के नागरिक रहे हैं एवं कुछ देशों में तो अभी भी इन पदों पर आसीन हैं। साथ ही, 42 देशों की सरकार अथवा विपक्ष में कम से कम एक भारतवंशी रहा है। दूसरी ओर, भारत के पड़ौसी देशों बांग्लादेश, पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान में भारतीय मूल के नागरिकों, विशेष रूप से हिंदुओं की जनसंख्या लगातार कम हो रही है। बांग्लादेश में तो वर्ष 1951 में कुल आबादी में हिंदुओं की आबादी 22 प्रतिशत थी वह आज घटकर 8 प्रतिशत से भी नीचे आ गई है। लगभग यही हाल पाकिस्तान का भी है। बांग्लादेश में तो हाल ही के समय में सत्ता पलट के पश्चात हिंदुओं सहित वहां के अल्पसंख्यक समुदायों पर कातिलाना हमले किए गए हैं। केवल बांग्लादेश ही क्यों बल्कि विश्व के किसी भी अन्य देश में हिंदुओं के साथ इस प्रकार की घटनाओं का कड़ा विरोध होना चाहिए। भारतीय मूल के नागरिक सनातन संस्कृति के संस्कारों के चलते बहुत ही शांतिपूर्वक तरीके से इन देशों के विकास में अपनी भागीदारी निभाते हैं।

भूकंप से यांमार -थाईलैंड समेत हिल गई कई देशों की दुनिया!

यांमार और थाईलैंड में दोपहर के समय आए भयंकर भूकंप को रिटर पैमान पर 7.9 की तीव्रता का नापा गया है। इतने तेज भूकंप के कारण दोनों ही देशों में भारी तबाही हुई है। इन देशों की विशाल इमारतें और पुल ढह गए और भारी जान माल का नुकसान हुआ।थाईलैंड के प्रधानमंत्री शिनवात्रा ने बैंकाक के अंदर आपातकाल की घोषणा की है। इस भूकंप का केंद्र यांमार बताया गया है। जिसका भारी प्रभाव थाईलैंड तक हुआ है। बैंकाक में वशिाल इमारत के ढहने से उसमें 43 लोग फंस गए हैं। आपातकालीन सेवाओं में जुटे कर्मियों का कहना है कि बैंकाक के चाटूचाक पार्क की इस इमारत के अंदर 50 लोग मौजूद थे। इस भूकंप की वजह से बैंकाक में अभी तक एक व्यक्ति के मरने की पुष्टि हो गई है, जबकि 50 लोग घायल हैं।यांमार में भी भारी तबाही हुई है। वहां मौजूद लोग चीखते-चिल्लाते हुए भागते नजर आ रहे हैं। बैंकॉक के 'चटुचक मार्केट' के पास स्थित घटनास्थल पर राहत एवं बचाव का कार्य किया जा रहा हैं ।

बैंकॉक में 7.9 तीव्रता के शक्तिशाली भूकंप से इमारतें हिलने लगीं थी। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण और जर्मनी के जीएफजेड भूविज्ञान केंद्र ने बताया कि दोपहर को यह भूकंप 10 किलोमीटर की गहराई पर आया था, जिसका केंद्र म्यांमार में था। ग्रेटर बैंकॉक क्षेत्र की आबादी 170 लाख से अधिक है, जिनमें से कई लोग ऊंची इमारतों वाले अपार्टमेंट में रहते हैं।दोपहर करीब डेढ़ बजे भूकंप आने पर इमारतों में अलार्म बजने लगे और घनी आबादी वाले मध्य बैंकॉक की ऊंची इमारतों एवं होटल से लोगों को बाहर निकाला गया। भूकंप इतना शक्तिशाली था कि कुछ ऊंची इमारतों के अंदरूनी हिस्सों में 'स्वीमिंग पूल' में पानी में लहरें उठती दिखीं। भूकंप का केंद्र मध्य म्यांमार में था, जो मोनीवा शहर से लगभग 50 किलोमीटर पूर्व में है।थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में भी भूकंप के झटके महसूस किए गए जहां सैंकड़ो लोग इमारतों से बाहर निकल आए। हालांकि जर्मन रिसर्च सेंटर फॉर जियोसाइंसेज ने बताया कि म्यांमार में 6.9 तीव्रता का भूकंप आया। भूकंप का केंद्र मंडाले शहर के पास 10 किमी की गहराई पर था। म्यांमार दुनिया के सबसे भूकंपीय रूप से सक्रिय क्षेत्रों में से एक माना जाता है। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, असम और नागालैंड राज्यों में आज आए भूकंप से लोग अपने-अपने घरों से बाहर निकल आए।वही दिल्ली व उसके आसपास के क्षेत्र में विगत 17 फरवरी की सुबह भूकंप के जोरदार झटके महसूस किए गए थे,जिसमे कई सेकंड तक धरती डोलती रही थी। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के मुताबिक रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 4.0 मापी गई थी, इसका केंद्र दिल्ली के पास ही धरती से 5 किलोमीटर की गहराई में था। इसीलिए तेज झटके महसूस हुए। कुछ सेकंड तक चलने वाले भूकंप के झटके इतने तेज थे कि इमारतों के अंदर जोरदार कंपन महसूस हुआ। भूकंप सुबह 5 बजकर 36 मिनट पर आया था, जिससे लोगों की नींद उड़ गई थी। भूकंप के झटके दिल्ली-एनसीआर भूकंपीय क्षेत्र 4 में आता है, जिससे यहां मध्यम से तीव्र भूकंप आने का खतरा रहता है। समय-समय पर दिल्ली एनसीआर में भूकंप के झटके महसूस होते रहते हैं, लेकिन इस तीव्रता के झटके बहुत समय बाद महसूस किए गए हैं। उत्तराखंड समेत नेपाल और भारत के अन्य क्षेत्रों में धरती बार बार डोलने लगती है। भूकंप के तेज झटकों से लोग दहशत में आ जाते है।सन 2022 में आए भूकंप के झटके इतने तेज थे कि गहरी नींद में सोए लोग हड़बड़ाहट में उठे और घरों से बाहर की ओर भागे थे।उस समय उत्तराखंड में भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 6.5 मापी गई थी।

दिल्ली के साथ ही नोएडा और गुरुग्राम में भी कई सेकेंड तक भीषण झटके महसूस किए गए। इसके कारण लोग उठ गए और कई लोग अपनी सोसायटी में बाहर निकल आए।ऐसा लगा कि बेड को कोई बहुत तेज धक्का मार रहा है। इस दौरान घर के फैन और झूमर भी भूकंप के असर के कारण तेजी से हिलने लगे।भूकंप पृथ्वी की सतह के हिलने को कहते हैं। यह पृथ्वी के स्थलमण्डल में ऊर्जा के अचानक मुक्त हो जाने के कारण उत्पन्न होने वाली भूकम्पीय तरंगों की वजह से होता है। भूकम्प बहुत हिंसात्मक हो सकते हैं और कुछ ही क्षणों में लोगों को गिराकर चोट पहुँचाने से लेकर पूरी आबादी को ध्वस्त कर सकने की इसमें क्षमता होती है।भूकंप का मापन भूकम्पमापी यंत्र से किया जाता है, जिसे सीस्मोग्राफ कहते है। 3 या उस से कम रिक्टर परिमाण की तीव्रता का भूकंप अक्सर अगोचर होता है, जबकि 7 रिक्टर की तीव्रता का भूकंप बड़े क्षेत्रों में गंभीर क्षति का कारण बन जाता है।भूकंप के झटकों की तीव्रता का मापन मरकैली पैमाने पर किया जाता है।पृथ्वी की सतह पर, भूकंप अपने आप को, भूमि को हिलाकर या विस्थापित कर के प्रकट करता है। जब एक बड़ा भूकंप उपरिकेंद्र अपतटीय स्थिति में होता है, यह समुद्र के किनारे पर पर्याप्त मात्रा में विस्थापन का कारण बनता है। भूकंप के झटके कभी-कभी भूस्खलन और ज्वालामुखी को भी पैदा कर सकते हैं। भूकंप अक्सर भूगर्भीय दोषों के कारण आते हैं।पिछले साल यानि सन 2021 में 11 सितंबर को जोशीमठ से 31 किलोमीटर पश्चिम दक्षिण पश्चिम में सुबह 5ः58 बजे भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। इस भूकंप की रिक्टर स्केल पर तीव्रता 4.6 थी। उत्तराखंड में इस भूकंप का प्रभाव चमोली, पौड़ी, अल्मोड़ा आदि जिलों में रहा था।इससे पूर्व 24 जुलाई सन 2021को उत्तरकाशी से 23 किलोमीटर दूर करीब 1 बजकर 28 मिनट पर भूकंप आया था। इस भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 3.4 मापी गई थी। जिला मुख्यालय उत्तरकाशी के साथ डुंडा, मनेरी, मानपुर, चिन्यालीसौड़, बड़कोट, पुरोला व मोरी से भी भूकंप के झटके महसूस किये गए थे।

हरिद्वार जिले में वर्ष 2020 में एक दिसम्बर को नौ बजकर 42 मिनट पर भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। रिक्टर पैमाने पर इसकी तीव्रता 3.9 मैग्नीट्यड मापी गई थी, जिसकी गहराई लगभग 10 किलोमीटर तक थी। इस भूकंप से कोई क्षति तो नही हुई थी।लेकिन यह भूकंप भविष्य में किसी बड़े भूकंप का संकेत अवश्य माना गया था।उत्तराखंड भूकंप के दृष्टि से अति संवेदनशील क्षेत्र है। यहां एक साल में कई बार भूकंप के झटके महसूस किए गए जाते हैं। 25 अगस्त सन 2020 को भी उत्तरकाशी में भूकंप आया था। उस समय भूकंप का केंद्र टिहरी गढ़वाल था। रिक्टर पैमाने पर उसकी तीव्रता 3.4 मापी गई थी। इससे पहले को चमोली और रुद्रप्रयाग जिलों में 21 अप्रैल सन 2020 को भूकंप के झटके महसूस हुए थे। जिसका केंद्र चमोली जिले में था, रिक्टर पैमाने पर उस भूकंप की तीव्रता 3.3 थी। भूकंप के इन झटको ने लोगो के मन में बेचैनी बढ़ा दी है।देवभूमि उत्तराखंड से लेकर गुजरात तक भूकंप का खतरा लगातार बना हुआ है।14 जून सन 2020 की शाम गुजरात के भचाऊ,राजकोट, अहमदाबाद में 5.5 तीव्रता के भूकंप ने सबकी नींद उड़ा दी थी।सन 2015 में नेपाल केन्द्रित भंयकर भूकम्प के कारण नेपाल और उत्तर भारत में ढाई हजार से अधिक मौते भूकंप से हो गई थी और अरबो रूपये की सम्पत्ति नष्ट हो गई थी।सबसे अधिक क्षति नेपाल और नेपाल से सटे बिहार में हुई थी। उस समय सात दशमलव नौ रियेक्टर पैमाने के अधिक तीव्रता के भूकम्प से जो कि हिरोशिमा बम विस्फोट से पांच सौ चार गुना ताकतवर था,से उत्तराखण्ड में भी दहशत फैल गई थी।हिरोशिमा बम विस्फोट से साढे बारह किलोटन आफ टीएनटी एनर्जी रिलीज हुई थी जबकि इस भंयकर भूकम्प से उनास्सी लाख टन आफ टीएनटी एनर्जी रिलीज हुई है जिससे नेपाल और विहार,उत्तर प्रदेश के साथ साथ कई राज्यों में भारी नुकसान हुआ था। उत्तराखण्ड में भी उस समय कई जगह भूकम्प के झटके महसूस किये गए थे। लेकिन उत्तराखंड में भूकम्प से अधिक नुकसान नही हुआ था,लेकिन इससे पूर्व उत्तराखंड भूकंप की भयंकर त्रासदी झेल चुका है।उत्तरकाशी, पिथौरागढ़,अल्मोड़ा, द्वारहाट, चमोली जिले भूकंप के निशाने पर है।दरअसल उत्तराखण्ड भूकम्प के मुहाने पर खड़ा है, यहां कभी भी भूकंप से धरती डोल सकती है।जिससे उत्तराखण्ड कभी भी तबाह हो सकता है। अपनी भोगोलिक परिस्थिति के कारण बादल फटने,जल प्रलय,भूस्खलन के कारण हजारो मौतो के साथ ही मकानों तथा खेत खलियानों के नष्ट होने का कारण बनता रहा है। भू वैज्ञानिको की माने तो उत्तराखण्ड कभी भी भूकम्प आपदा से प्रभावित हो सकता है। भूकम्प की दृष्टि से अत्यन्त संवेदनशील उत्तराखण्ड सच पुछिए तो मौत के मुहाने पर खडा है। उत्तरकाशी में आए भूकम्प और धारचूला व लोहाधाट जैसी जगहों पर कई बार आ चुके भूकम्प की त्रासदी झेल चुके उत्तराखण्ड न सिर्फ अपने लिए बल्कि पडोसी राज्यों के लिए भी तबाही का सबब बन सकता है।

कलंककार है कुणाल कामरा !

महाराष्ट्र के उप-मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के बारे में भद्दी पैरोडी करने के चलते कुणाल कामरा विवादों में है, इस प्रकरण में एफआईआर दर्ज हो गई है और पुलिस जांच कर रही है। हास्य, उसे कहते हैं, जो सबके होठों पर मुस्कान ले आये, जो सबको खिल-खिला कर हंसने पर मजबूर कर दे। एक विचारधारा वाले हंसें और दूसरी विचारधारा वाले आक्रोशित हो जायें, इसे हास्य नहीं कह सकते, ऐसा तो हर दिन राजनेता कर ही रहे हैं, ऐसे विषयों पर अलग से कॉमेडी करने की आवश्कयता ही नहीं है, इसीलिये कुणाल कामरा के पिछले वीडियो भी सराहनीय नहीं कहे जा सकते हैं, यह हास्य और व्यंग्य की ओट में भद्दी टिप्पणी करने को लेकर कुख्यात है। कुणाल कामरा उच्चतम न्यायालय, मुख्य न्यायाधीश, प्रधानमंत्री, गृह मंत्री और अन्य तमाम विशिष्ट व्यक्तियों पर भद्दी टिप्पणी करता रहा है, इससे स्पष्ट है कि यह हास्य कलाकार नहीं बल्कि, कलंककार है। एकनाथ शिंदे ने कुणाल कामरा को सुपारी किलर भी करार दिया है, इस विवाद पर ही चर्चा कर रहे हैं बीपी गौतम... कुणाल कामरा ने फिल्म दिल तो पागल है के एक गाने की भद्दी पैरोडी बनाई, जिसमें एकनाथ शिंदे का नाम लिये बिना उन्हें गद्दार कहा था। उन्होंने 2022 में शिवसेना और 2023 में एनसीपी के टूटने पर भी व्यंग्य किया था, इस सब पर महाराष्ट्र में सियासी तूफान खड़ा हो गया। शिवसेना समर्थक आक्रोशित हो उठे, उन्होंने रविवार रात खार के हेबिटेट कॉमेडी क्लब में तोड़-फोड़ कर दी थी, यहां शो हुआ था, साथ ही क्लब के होटल को भी नुकसान पहुंचा। शिवसेना विधायक मुरजी पटेल की शिकायत पर खार पुलिस ने कुणाल कामरा के विरुद्ध मानहानि का मुकदमा दर्ज कर लिया, वहीं एकनाथ शिंदे गुट के 40 कार्यकर्ताओं पर शो के वेन्यू में तोड़-फोड़ करने का भी मुकदमा दर्ज किया गया है। सोमवार को पुलिस ने शिवसेना नेता राहुल कनाल सहित 12 लोगों को गिरफ्तार किया, जिन्हें न्यायालय ने जमानत दे दी। मुंबई पुलिस ने कुणाल कामरा को दूसरा नोटिस जारी किया है। महाराष्ट्र के उप-मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के विरुद्ध कथित तौर पर अपमानजनक टिप्पणी करने के मामले में खार पुलिस स्टेशन में जांच अधिकारी के सामने कुणाल कामरा को पेश होने को कहा गया है, यह शिकायत शिवसेना विधायक मुरजी पटेल ने दर्ज कराई थी, इससे मंगलवार को पुलिस ने कुणाल कामरा को पहला नोटिस भेजा था। सूत्रों के अनुसार कुणाल कामरा ने जवाब में एक हफ्ते का समय मांगा था लेकिन, पुलिस ने अब उन्हें दूसरा नोटिस जारी कर दिया है। उप-मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कटाक्ष की तुलना किसी के विरुद्ध बोलने के लिये सुपारी लेने से की, उन्होंने कुणाल कामरा की टिप्पणियों पर प्रतिक्रिया देते हुये कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है और हमें भी व्यंग्य समझ में आता है लेकिन, इसकी एक सीमा होनी चाहिये, इसके अलावा

उन्होंने विधान परिषद में विरोधियों को आत्ममंथन करने की सलाह देते हुये कहा कि जनता के न्यायालय में यह निर्णय लिया गया है कि गद्दार कौन है और खुद्दार कौन है, आईने में देख कर किसी का वंश नहीं बताया जा सकता।

शिंदे ने कहा कि चाहे कितनी भी सुपारी देकर बदनामी की मुहिम चलाई जाये, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। एकनाथ शिंदे ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात करने वाले विरोधियों ने महाविकास आघाड़ी सरकार के दौरान कई लोगों की अभिव्यक्ति स्वतंत्रता पर रोक लगाई, उन्होंने कविता पढ़ते हुये कहा कि तुम लाख कोशिशें कर लो हमें गिराने की, हम न बिखरेंगे कभी, उलटा दुगनी रफ्तार से निखरेंगे। उन्होंने कहा कि सत्य को परेशान किया जा सकता है लेकिन, पराजित नहीं किया जा सकता, यदि हम उस तक नहीं पहुंच सके तो, हमें क्या नीचे गिरा देगा? हमसे दुश्मनी मोल लेने से पहले अपना कद बढ़ाओ, यदि समानता होगी तो, प्रतिस्पर्धा मजेदार होगी, सबसे पहले, सोच-विचार कर बड़ा बनो, तुममें से कुछ लोग अहंकार में डूबे हुये हो, अब सुधर जाओ मेरे प्यारे, आप गद्दार-गद्दार कहते रहिये लेकिन, जनता ने तय कर लिया है कि कौन गद्दार है और कौन देशद्रोही, इसलिये आप आईने में देखकर अपनी विरासत नहीं बता सकते। एकनाथ शिंदे ने कहा कि कुछ पाखंडी आगे बढ़ रहे हैं और कुछ पाखंडी समर्थन ले रहे हैं लेकिन, आपके विरोधी जो रोज कर रहे हैं, रोज यह लोग संविधान में अभिव्यक्ति की आजादी की बात करते हैं, आप एक उंगली दिखाते हैं, चार उंगली आपके सामने हैं। कुणाल कामरा का जनवरी 2020 में एक वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें कुणाल कामरा मुंबई से लखनऊ जा रही एक फ्लाइट में सहयात्री पत्रकार अर्णब गोस्वामी को घेरते और उनकी सीट पर जाकर उन्हें परेशान करते हुये दिखे थे, इस घटना के बाद कुणाल कामरा पर दुर्व्यवहार के लिये इंडिगो, एयर इंडिया, गो एयर और स्पाइसजेट जैसी कंपनियों ने छः महीने का प्रतिबंध लगा दिया था, इस पूरे घटनाक्रम को लेकर कुणाल कामरा ने एक वीडियो ट्विटर पर स्वयं पोस्ट किया था। इस दौरान उन्होंने अर्णब गोस्वामी को डरपोक कहा था।

कुणाल कामरा ने मई 2020 में एक एडिटेड वीडियो शेयर किया था, जिसमें पीएम नरेंद्र मोदी के जर्मनी दौरे के समय एक सात साल के बच्चे के गाने के वीडियो से छेड़छाड़ की गई थी, इस पर राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग कुणाल कामरा के विरुद्ध कार्रवाई की मांग करते हुये तत्काल वीडियो हटाने के लिये कहा था। हालांकि, कुणाल कामरा ने अपने बचाव में कहा था कि यह वीडियो सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध है। अपने पोस्ट में उन्होंने कहा था कि एनसीपीसीआर ने उन पर एक मीम पोस्ट करने के लिये कार्रवाई की मांग की है।

कुणाल कामरा हास्य के नाम पर विशिष्ट लोगों के निजी जीवन पर भद्दी टिप्पणी करने को कुख्यात है, इसी क्रम में मुकेश अंबानी के बेटे अनंत अंबानी की बीमारी, मोटापा, उसकी नई नवेली पत्नी पर भी भद्दी टिप्पणी कर चुके हैं। बता दें कि अनंत अंबानी बीमारी और दवाओं के कारण अत्यधिक मोटे हो गये हैं, जिसको लेकर कुणाल कामरा ने भद्दी टिप्पणी की थी, उसकी शादी को लेकर निंदनीय बातें कही थीं।

उच्चतम न्यायालय में 2020 में कुणाल कामरा के विरुद्ध एक याचिका दायर हुई थी, जिसमें उन पर अपने शो बी लाइक के दौरान उच्चतम न्यायालय को ब्राह्मण-बनिया का मामला बताने का आरोप लगा था, इस पर अटॉर्नी जनरल केके वेणुगोपाल ने न्यायपालिका और जजों को सोशल मीडिया पोस्ट के माध्यम से कथित तौर पर घेरने के लिये कुणाल कामरा पर अवमानना की कार्रवाई को मंजूरी दी थी। कुणाल कामरा ने तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ पर भी तंज कसा था। उन्होंने सोशल साइट्स पर पोस्ट कर सुप्रीम कोर्ट को सुप्रीम जोक ऑफ द कंट्री करार दिया था। कुणाल कामरा ने सुप्रीम कोर्ट को लेकर एक एडिटेड फोटो भी पोस्ट की, साथ ही सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ के विरुद्ध टिप्पणी भी की थी, इस मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट ने दिसंबर 2020 को कुणाल कामरा को कारण बताओ नोटिस जारी किया था। कोर्ट की अवमानना के प्रकरण में अपनी हरकतों पर स्पष्टीकरण देने के लिये कहा गया था। हालांकि, कुणाल कामरा ने स्पष्ट कहा था कि वह अपने बयानों के लिये माफी नहीं मांगेंगे। अपने आधिकारिक बयान में उन्होंने अभिव्यक्ति की आजादी का हवाला देते हुये बयान वापस लेने से मना कर दिया था।

शहीद वीर नारायण सिंह श्रम अन्न सहायता योजना का हुआ शुभारंभ, हजारों श्रमिक होंगे लाभान्वित

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले में आज से शहीद वीर नारायण सिंह श्रम अन्न सहायता योजना का शुभारंभ हो गया है। कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी डी. राहुल वेंकट के निर्देशानुसार में मुख्य अतिथि नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिभा यादव ने नगर पालिका परिषद् मनेंद्रगढ़ सब्जी मंडी के पास इस योजना का उद्घाटन फीता काटकर किया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि के व्दारा छत्तीसगढ़ महतारी के छायाचित्र पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इसके साथ ही मंच को संबोधन करते हुए श्रम अधिकारी विनय सिंह ठाकुर ने बताया कि शहीद वीर नारायण सिंह श्रम अन्न सहायता योजना के तहत सभी संगठित और असंगठित पंजीकृत श्रमिकों को मात्र 5 रुपए में गरम और पौष्टिक भोजन भरपेट खाने को मिलेगा। जिसका संचालक मेसर्स आर.के.एसोसिएट्स एंड हॉटिलियर्स प्राइवेट लिमिटेड रायपुर के द्वारा किया जाएगा । इस योजना के तहत जिले के लगभग 60 हजार संगठित और असंगठित श्रमिकों को मात्र 5 रुपए में गरम और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जाएगा, जिसमें 22 हजार पंजीकृत श्रमिक केवल मनेंद्रगढ़ में हैं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार श्रमिकों के कल्याण के लिए कई योजनाएं चला रही है। मुख्यमंत्री नोनीबाबू मेधावी शिक्षा सहायता योजना के तहत श्रमिक परिवार के मेधावी बच्चों को 2 लाख रुपये तक की सहायता राशि दी जाती है। मुख्यमंत्री मिनीमाता महतारी जतन योजना के तहत पंजीकृत महिला निर्माण श्रमिकों को गर्भावस्था के दौरान आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है, जिसमें बच्चे के जन्म के बाद 20,000 रुपये की एकमुश्त राशि दी जाती है। मुख्यमंत्री नोनी सशक्तिकरण सहायता योजना के तहत श्रमिक परिवारों की पहली दो बेटियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए 20-20 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जाती है। नौनिहाल छात्रवृत्ति योजना के तहत श्रमिक परिवारों के बच्चों को अलग-अलग कक्षावार शैक्षणिक स्तर के आधार पर 1000 से 12,000 रुपये तक की छात्रवृत्ति राशि दी जाती है। इस योजना के माध्यम से पंजीकृत और अपंजीकृत निर्माण श्रमिकों को मात्र 5 रुपए में गरम और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार होगा। इस अनूठी पहल से मनेंद्रगढ़ सहित पूरे जिले के श्रमिकों को बड़ी राहत मिलेगी और उनके पोषण व आर्थिक स्थिति को मजबूती मिलेगी। इसके साथ जिन श्रमिकों के पास श्रम कार्ड नहीं बना है, उनका कार्ड भी यही से बनेगा और विभिन्न योजनाओं की जानकारियों को भी यही से लोगों को बताया जाएगा। वही नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिभा यादव ने कहा कि यह योजना श्रमिक वर्ग के लिए किसी वरदान से कम नहीं है, क्योंकि कम आय में जीवनयापन करने वाले श्रमिकों को अब मात्र 5 रुपए में भरपेट भोजन मिलेगा, जिससे उनके दैनिक जीवन में आर्थिक राहत आएगी।

उन्होंने आगे कहा कि सरकार द्वारा चलाई जा रही अन्य योजनाओं की जानकारी भी इस केंद्र के माध्यम से श्रमिकों को दी जाएगी, ताकि वे शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य जरूरी सुविधाओं का लाभ उठा सकें। श्रम अन्न सहायता योजना का उद्देश्य श्रमिकों को भोजन के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाना है। इसके साथ ही मनेंद्रगढ़ नगर पालिका उपाध्यक्ष धर्मेन्द्र पटवा ने श्रम अन्न सहायता योजना के शुभारंभ पर कहा कि यह योजना एमसीबी जिले के श्रमिकों के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है, जिससे उन्हें मात्र 5 रुपए में गरम और पौष्टिक भोजन उपलब्ध होगा। उन्होंने कहा कि सरकार श्रमिकों के कल्याण के लिए लगातार कार्य कर रही है, और इस योजना से हजारों श्रमिकों को सीधा लाभ मिलेगा। इसके साथ ही श्रम कार्ड पंजीकरण और अन्य योजनाओं की जानकारी भी इसी केंद्र से दी जाएगी, जिससे श्रमिक अपने अधिकारों और सरकारी सुविधाओं का अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। वही नेता प्रतिपक्ष संजू यादव ने श्रम अन्न सहायता योजना के शुभारंभ पर कहा कि हमारे मुख्यमंत्री जी ने प्रदेश के श्रमिकों के लिए जो योजनाएं शुरू की हैं, वे वास्तव में सराहनीय हैं। श्रमिक समाज हमारे विकास का मजबूत आधार हैं, और सरकार की यह पहल उन्हें आर्थिक व सामाजिक संबल प्रदान करेगी। मात्र 5 रुपए में पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना श्रमिकों के जीवन में एक सकारात्मक बदलाव लाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार न केवल श्रमिकों के भोजन की चिंता कर रही है, बल्कि उनके बच्चों की शिक्षा और महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए भी कई योजनाएं चला रही हैं।

पढ़ाने के बहाने से लाए थे घर, कराने लगे झाड़ू-पोछा

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। रायपुर में आदिवासी बच्चों को सरकारी स्कीम में पढ़ाने के बहाने उनका शोषण किया गया। ये शोषण सामाजिक संस्था के जरिए एक दंपती ने किया है। हत्तह के माध्यम से बच्चों को पति-पत्नी कांकेर से रायपुर लेकर आए थे। पढ़ाने का झांसा दिया और फिर बर्तन मंजवाने लगे। रायपुर में अपने घर में दंपती बच्चों से झाड़ू-पोछा और पैर भी दबवाते थे। साथ ही बच्चों को अपने पेरेंट्स से भी बात करने के लिए मना कर दिया। किसी तरह बच्चों ने जब अपने परिजनों को आपबीती बताई तो पूरे मामले का खुलासा हुआ।

यह पूरा मामला साल 2014-15 का है। रायपुर के कबीर नगर फेज-4 में सतीश शर्मा उर्फ क्षितिज अपनी पत्नी बिनीता शर्मा के साथ रहता था। उन्होंने बस्तर मित्र फाउंडेशन के नाम से झूठी जानकारी देकर मंत्रालय से संस्था का रजिस्ट्रेशन करवाया। इसके बाद शिक्षा विभाग से अपूवल लेकर आदिम जाति और अनुसूचित जाति के स्टूडेंट के प्रोग्रेस के लिए काम करने की बात कही। आरोपी पति-पत्नी सरकार की उत्कर्ष विद्यार्थी योजना/जवाहर उत्कर्ष योजना के तहत कांकेर के 3 आदिवासी बच्चों को अपने घर लेकर आ गए। फिर पूरे समय घर का काम करवाने लगे। किसी तरह जब परिजन तक ये बाद पहुंची तो पूरे मामले की शिकायत हुई। पुलिस ने इस मामले में आरोपी सतीश शर्मा को गिरफ्तार कर लिया, जबकि उनकी पत्नी बिनीता शर्मा फरार हो गई। कोर्ट ने साल 2022 में आरोपी सतीश शर्मा को आजीवन कैद की सजा सुनाई है। पुलिस ने अनुसूचित जाति जनजाति एक्ट, किशोर न्याय और बालकों का संरक्षण एक्ट के अलावा 420 जैसी धाराएं भी आरोपियों पर लगी।

विहिप की शोभायात्रा में देश भर की कला-संस्कृति की झलक

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (एजेंसी)। कोरबा में हिंदू नव वर्ष के स्वागत को लेकर विश्व हिंदू परिषद की ओर से 30 मार्च, रविवार को भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। इसकी तैयारियां जोरों पर हैं। यह यात्रा कोसाबाड़ी चौक से आईसीआईसीआई चौक तक जाएगी। शोभायात्रा में देश भर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत देखने को मिलेगी। इसमें छत्तीसगढ़ी लोक नृत्य, पंजाबी गटका और बस्तर नृत्य शामिल हैं। नागपुर पंथी, बंगाली डाक निशान बाजा और कर्नाटक की कांतारा झांकी भी आकर्षण का केंद्र होगी। ओडिशा के कलाकारों की प्रस्तुतियां और शिव-पार्वती का लाइव स्टेज शो भी होगा। अयोध्या से श्रीराम-लक्ष्मण की दिव्य झांकी विशेष आकर्षण होगी। कल्की अवतार, ओपन ट्रेलर डीजे और अघोरी तांत्रिक साधना ग्रुप की प्रस्तुतियां भी होंगी। धुमाल नृत्य की झांकियां भी लोगों का मन मोहेंगी। विहिप के जिला अध्यक्ष अमरजीत सिंह ने बताया कि यह आयोजन पिछले 8 वर्षों से हो रहा है। उन्होंने कहा कि नागरिकों के सहयोग और भगवान राम की कृपा से यह परंपरा जारी है। इस बार विभिन्न राज्यों की मंडलियों की भागीदारी से कार्यक्रम और भी खास बन गया है। आयोजन स्थल को दुल्हन की तरह सजाया गया है। संगठन ने सभी नागरिकों से इस आयोजन में शामिल होने का आग्रह किया है। यह शोभायात्रा धार्मिक उत्साह के साथ-साथ देश की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक भी है।

भतीजे का बाइक स्टंट, चाचा पर 6 हजार का चालान

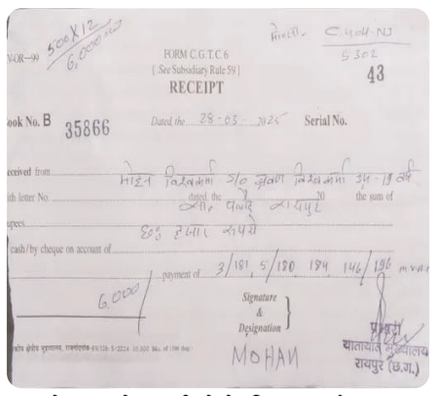

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। रायपुर में एक भतीजे के चक्कर में चाचा पर 6 हजार का फाइन हो गया है। ये फाइन मोटर व्हीकल एक्ट के तहत ट्रैफिक पुलिस ने किया है। युवक ने अपने चाचा की बाइक की चाबी चुराकर बिना बताए नवा रायपुर ले गया। फिर वहां की सड़कों पर लहराते हुए जमकर स्टंट किया। वहां से गुजर रहे किसी व्यक्ति ने इसका वीडियो बना लिया। जो सोशल मीडिया में वायरल हो गया। इस मामले में अब एक्शन हुआ है। वायरल वीडियो में एक बाइक सवार गाड़ी को सांप की तरह लहरा कर चला रहा था। इसके अलावा वह चलती बाइक में सोकर स्टंट दिखा रहा था। वीडियो के आधार पर बाइक का नंबर ट्रेस कर कार्रवाई की गई।

ट्रैफिक प्रभारी सतीश ठाकुर के मुताबिक, यह गाड़ी पलोद गांव मंदिर हसौद के रहने वाले खेलू विश्वकर्मा की थी। पुलिस ने उन्हें थाने बुलाया। तब पता चला कि उनका 19 साल का भतीजा मोहन विश्वकर्मा बिना बताए घर से गाड़ी की चाबी चुपचाप लेकर निकल गया। फिर वह गाड़ी को लेकर नवा रायपुर की सड़कों में घूमने लगा। इसी दौरान उसने अलग-अलग तरह के स्टंट किया जिसका वीडियो वायरल हुआ है।

युवक के पास गाड़ी चलाने के लिए लाइसेंस भी नहीं था। इस वजह से ट्रैफिक पुलिस ने गाड़ी मालिक खेलू विश्वकर्मा के खिलाफ मोटर व्हीकल एक्ट की अलग-अलग धाराओं में एक्शन लिया। जिसमें बिना लाइसेंस वाले व्यक्ति को गाड़ी देना, बिना इंश्योरेंस और दस्तावेजों के गाड़ी चलाने जैसे मामले हैं। इस मामले में पुलिस ने 6,000 का जुर्माना लगाया है।

ट्रैफिक पुलिस अफसरों का कहना है कि बाइकर्स गैंग घूमने के बहाने नवा रायपुर में जाकर स्टंट करते हैं, रील बनाते हैं और सोशल मीडिया में पोस्ट करते है जिससे दूसरे युवक प्रेरित होकर वह भी स्टंट करते हैं। इसके लिए वह स्पीड बाइक खरीदने के लिए पालकों पर दबाव डालते है।पालक भी बच्चों की जिद में मजबूरी में स्पीड बाइक खरीदकर दे देते हैं और यह भी नहीं देखते की बच्चे क्या कर रहे हैं। स्टंट करना एवं स्पीड बाइक चलाना गलत है इससे हादसे हो सकते है और शरीर को नुकसान व जान का खतरा हो सकता है। बता दें कि यातायात पुलिस ने नवा रायपुर की सड़कों पर स्पीड में चलने वाले बाइकर्स पर कैमरों से निगरानी रख रही है।

हृदय रोगी प्राचार्य को हाईकोर्ट से बड़ी राहत, प्राचार्य का ट्रांसफर आदेश रद्द

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (निप्र)। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने हृदय रोग से पीड़ित एक प्राचार्य को बड़ी राहत दी है। कोर्ट ने स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा जारी ट्रांसफर आदेश को निरस्त कर दिया है। स्कूल शिक्षा सचिव ने स्वामी आत्मानंद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पेंड्रा के प्राचार्य विजय कुमार वर्मा का ट्रांसफर प्रभारी बीईओ पेंड्रा के पद पर किया था। इस आदेश के खिलाफ वर्मा ने हाईकोर्ट में याचिका दायर की। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता अभिषेक पांडेय और स्वातिरानी सराफ ने कोर्ट में दलील दी कि वर्मा हृदय रोग से पीड़ित हैं। वे बीईओ पद की कठिन ड्यूटी नहीं कर सकते। साथ ही, उन्होंने बताया कि वर्तमान प्रभारी बीईओ रविंद्रनाथ चंद्रा के स्थानांतरण पर भी कोर्ट का स्टे आदेश है। हाईकोर्ट ने दो कारणों से याचिका स्वीकार की। पहला, याचिकाकर्ता की स्वास्थ्य स्थिति और दूसरा, मौजूदा बीईओ के ट्रांसफर पर स्टे। कोर्ट ने वर्मा को पुनः स्वामी आत्मानंद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पेंड्रा में प्राचार्य पद पर बहाल करने का आदेश दिया।

थाने के सामने बिक रही नशीली दवाईयां

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर के खेल परिसर मैदान में 2 युवक प्रतिबंधित नशीली टैबलेट और इंजेक्शन बेच रहे थे। जिन्हें पुलिस ने शुक्रवार को गिरफ्तार किया है। उनके पास से इंजेक्शन और टैबलेट बरामद किया गया है। दोनों के खिलाफ पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है। मामला सरकंडा थाना इलाके का है।

दरअसल, जिले में नशे का अवैध कारोबार बेधड़क चल रहा है। हालांकि, पुलिस लगातार कार्रवाई करने का दावा कर रही है। बावजूद इसके तस्कर बेखौफ होकर नशीली और प्रतिबंधित दवाईयां बेच रहे हैं। सरकंडा थाना के सामने खेल परिसर में भी नशेड़ियों का जमावड़ा लगा रहता है। जिससे परेशान होकर लोगों ने इसकी शिकायत पुलिस से की थी।

सीएसपी सिद्धार्थ बघेल ने बताया कि, कुछ समय से इंजेक्शन और टैबलेट बिक्री की शिकायत मिल रही थी। शुक्रवार को खेल परिसर के पीछे मैदान में दो व्यक्ति प्रतिबंधित नशीली टैबलेट और इंजेक्शन बेचने के लिए ग्राहक के इंतजार में खड़े थे। सूचना मिलते ही इसकी जानकारी एसपी को देते हुए टीम गठित की।

एनडीपीएस के तय नियमों का पालन करते हुए मैदान में घेराबंदी कर दोनों आरोपियों को पकड़ा। पूछताछ में एक ने अपना नाम नरेश उर्फ सूरज साहू (23) चिंगराजपारा तो दूसरे ने सरोज उर्फ सूरज सोनी (26) निवासी अशोक विहार फेस 2 बताया।

जब दोनों युवक की तलाशी ली गई तब, एक युवक के पास से नाइट्राजेपन टैबलेट की 10 स्ट्रीप में 120 नग और 820 रुपए कैश मिला। वहीं, दूसरे युवक से एव्हील की 200 एम्पुल इंजेक्शन और 320 रुपए कैश बरामद हुआ। दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर पुलिस रिमांड पर जेल भेज दिया है।

थाने में सामने स्थित खेल परिसर और उसके आसपास आरोपी लंबे समय से नशीली इंजेक्शन और टैबलेट का कारोबार कर रहे थे। पुलिस को इसकी भनक नहीं होने की बात कही जा रही है। वहीं, आसपास के लोगों का कहना है कि पुलिस को इसकी जानकारी पहले से थी।

राज्यपाल ने किया पक्षी ब्रोशर और पर्यटन डायरी 2025 का विमोचन

मीडिया ऑडीटर, कोरिया(एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले में राज्यपाल रमेन डेका ने कलेक्टरेट सभाकक्ष में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। उन्होंने जिले के पर्यटन स्थलों पर आधारित डायरी 2025 और पक्षी प्रेमियों के लिए विशेष ब्रोशर का विमोचन किया।

उन्होंने कलेक्टर चंदन त्रिपाठी की फोटोग्राफी और पक्षी प्रेम की विशेष प्रशंसा की। कलेक्टर चंदन त्रिपाठी द्वारा खींची गई पक्षियों की दुर्लभ तस्वीरें इस ब्रोशर की मुख्य विशेषता हैं। डायरी में जिले के विभिन्न पर्यटन स्थलों की तस्वीरें शामिल की गई हैं। ब्रोशर में कोरिया जिले में पाई जाने वाली पक्षी प्रजातियों की शोधपरक जानकारी दी गई है। कोरिया जिले में पक्षियों के लिए प्राकृतिक आवास मौजूद हैं। सोनहत वन क्षेत्र, टाइगर रिजर्व, बालमपहाड़ी, बाघ खैरी, झुमका, फूलपुर गेज और छिंदडांड जैसे स्थान प्रवासी और स्थानीय पक्षियों का घर हैं। यहां जंगली उल्लू, कठफोड़वा, नीलकंठ, बुलबुल, बोनेली का चील जैसी दुर्लभ प्रजातियां देखी जा सकती हैं। ई-बर्ड वेबसाइट के अनुसार छत्तीसगढ़ के वन क्षेत्रों में करीब 243 पक्षी प्रजातियां पाई जाती हैं। राज्यपाल ने कहा कि यह बेहतरीन संकलन है।

चिरमिरी निगम में आपसी खींचतान में नहीं हुआ बजट सत्र

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी छत्तीसगढ़ के चिरमिरी नगर निगम में इस बार बजट सत्र को लेकर बड़ा विवाद खड़ा हो गया। नगर निगम प्रशासन धारा 97 और 98 का पालन करने में पूरी तरह विफल रहा, जिससे सामान्य सभा में बजट प्रस्तुत नहीं किया जा सका। आंतरिक गुटबाजी और खींचतान के चलते मार्च महीने में होने वाला बजट सत्र आयोजित नहीं हो पाया।

जल्दबाजी में महापौर परिषद में मात्र एक पन्ने का बजट पेश कर दिया गया, जिससे पारदर्शिता को लेकर सवाल खड़े हो रहे हैं। आशंका जताई जा रही है कि यह पुराने कामों के बिल पास कराने का षड्यंत्र हो सकता है। जनप्रतिनिधियों ने इस पर कड़ा विरोध जताया है और जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग उठाई है।

इधर, मनेंद्रगढ़ जनपद पंचायत में 72 ग्राम पंचायतों के नवनिर्वाचित सरपंचों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देश पर आयोजित इस कार्यक्रम में पंचायत संचालन, वित्तीय प्रबंधन और विकास योजनाओं की जानकारी दी गई।

प्रशिक्षण में प्रधानमंत्री आवास योजना, मनरेगा और जल जीवन मिशन जैसी योजनाओं के बारे में भी बताया गया। कार्यक्रम के दौरान सरपंचों को ग्राम पंचायतों के कुशल संचालन और बजट प्रबंधन के गुर सिखाए गए।

वहीं, ग्राम पंचायत चनवारीडांड में स्वच्छता को लेकर नई पहल की गई। सरपंच सोनू सिंह उरांव के नेतृत्व में ग्रामीणों ने सामुदायिक तालाब की सफाई के लिए श्रमदान किया। इस पहल को ओडीएफ प्लस मॉडल ग्राम पंचायत प्रशिक्षण से प्रेरणा मिली है।

स्वच्छ भारत मिशन के तहत जल्द ही गांव में डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण की शुरुआत की जाएगी, जिससे स्व-सहायता समूह की महिलाओं को रोजगार भी मिलेगा। इसके अलावा, गांव के सार्वजनिक स्थलों पर भी स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा। इस अभियान में स्वच्छ भारत मिशन के समन्वयकों समेत कई जनप्रतिनिधि और ग्रामीण शामिल हुए।

चक्काजाम से पहले पहुंचे अधिकारी, डामरीकरण का आश्वासन

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा((निप्र))। नेशनल हाईवे 43, अंबिकापुर-सूरजपुर मुख्य मार्ग में कालीघाट के पास करीब दो किलोमीटर सड़क का कार्य अधूरा छोड़ दिए जाने के विरोध में ग्रामीणों ने चक्काजाम एवं विरोध प्रदर्शन के लिए जुटे तो नेशनल हाईवे के अधिकारी मौके पर पहुंचे। नेशनल हाइवे के एसडीओ ने 24 घंटे में डामरीकरण शुरू कराने का आश्वासन दिया, जिसके बाद विरोध प्रदर्शन रोक दिया गया। दो किलोमीटर सड़क का डामरीकरण नहीं होने के कारण आए दिन हादसे हो रहे हैं।

अंबिकापुर-सूरजपुर मुख्य मार्ग पर स्थित कालीघाट के पास नेशनल हाईवे में नए पुल निर्माण एवं चौड़ीकरण का कार्य बारिश के दौरान शुरू किया गया था। इस दौरान केवल पुल निर्माण का कार्य किया गया और सड़क का निर्माण अधूरा छोड़ दिया गया। अधूरे सड़क पर उड़ने वाली धूल के कारण लोगों का जीना मुहाल हो गया है।

यहां काली मंदिर में चैत्र नवरात्र पर मेले का आयोजन किया जाता है। स्थानीय लोगों ने चैत्र नवरात्र के पूर्व सड़क निर्माण पूरा कराने की मांग की थी। सड़क का कार्य विभाग ने नहीं शुरू कराया तो ग्रामीणों ने शनिवार को चक्काजाम का ऐलान किया था। चक्काजाम के लिए बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर पहुंच गए।

नेशनल हाईवे के एसडीओ निखिल लकड़ा कालीघाट पहुंचे और आंदोलनकारियों से बात की। नेशनल हाइवे के एसडीओ ने ठेकेदार से बात की और तत्काल कार्य शुरू करने के लिए कहा। निखिल लकड़ा ने आंदोलनकारियों को 24 घंटे में डामरीकरण का कार्य शुरू करने का आश्वासन दिया, जिसके बाद चक्काजाम स्थगित कर दिया गया।

ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि 24 घंटे में डामरीकरण का कार्य शुरू नहीं किया गया तो वे उग्र आंदोलन करेंगे। नेशनल हाईवे के एसडीओ निखिल लकड़ा ने बताया कि नेशनल हाईवे में पुलिया निर्माण पूरा हो गया है। डेढ़ सौ मीटर अप्रोच रोड में डब्लूबीएम का कार्य हुआ है। इसमें धूल उड़ती है। ठेकेदार ने 24 घंटे में काम शुरू करने का आश्वासन दिया है। दो किलोमीटर तक चौड़ीकरण के तहत डामरीकरण का कार्य किया जाएगा।

बस ट्रांसपोर्टर की लात-घूंसे से बेहरमी से पिटाई,

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा((निप्र))। छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर में कार और थार के बीच टक्कर हो गई। हादसे के बाद युवकों ने थार सवार बस ट्रांसपोर्टर (संचालक) की बेरहमी से पिटाई कर दी। सिर फूटने से वो लहूलुहान हो गया। मारपीट और गुंडागर्दी का लाइव वीडियो भी सामने आया है। मामला गांधीनगर थाना इलाके का है।जानकारी के मुताबिक, यह हादसा शुक्रवार की रात करीब 10 बजे हुआ है। रिंग रोड पर गांधी चौक से प्रतापपुर नाका की ओर जा रहे थार की शिवधारी कॉलोनी मोड़ के पास हुंडई वर्ना कार से टक्कर हो गई। कार सवार गाड़ी मोड़ रहे थे। इसी दौरान थार से टकरा गई।

हादसे के बाद थार चला रहे सूरजपुर निवासी संजय सिंह गाड़ी रोककर यह देखने के लिए उतरा की हादसे में किसी को चोट तो नहीं आई है। लेकिन कार सवार युवकों ने उसे पकड़कर पीट दिया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, युवकों ने संजय सिंह का सिर खंभे से टकरा दिया।

वो लहूलुहान हो गया, तब भी उसे आधे घंटे तक बेदम पीटते रहे। मारपीट से संजय सिंह गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना के दौरान किसी ने घायल युवक को बचाने की कोशिश नहीं की। हालांकि, मारपीट करने का वीडियो बना लिया। जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

घटना की सूचना मिलने पर गांधीनगर पुलिस मौके पर पहुंची। घायल संजय को उनसे छुड़ाया गया। फिर इलाज के लिए हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। इलाज के बाद शनिवार दोपहर को संजय सिंह शिकायत करने गांधीनगर थाने पहुंचा।

घायल संजय ने वसीम कुरैशी और डॉ. मनू कुरैशी के खिलाफ मारपीट की शिकायत दर्ज कराई है। संजय सिंह के अनुसार, कार सवारों ने एकाएक कार मोड़ दी। जिस कारण कार से उनकी थार टकरा गई थी। फिलहाल, गांधीनगर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

कॉमेडियन कुणाल कामरा पर 3 नए केस दर्ज

मुंबई (एजेंसी)। स्टैंडअप कॉमेडियन कुणाल कामरा के खिलाफ मुंबई के खार पुलिस स्टेशन में 3 नए केस दर्ज किए गए हैं। ये केस महाराष्ट्र के डिप्टी ष्टरूएकनाथ शिंदे को लेकर दिए गए विवादित बयान से जुड़े हैं। मुंबई पुलिस की ओर से शनिवार को दी गई जानकारी के मुताबिक, पहली शिकायत जलगांव की मेयर ने दर्ज करवाई है, जबकि बाकी 1-1 केस नासिक के दो अलग-अलग बिजनेसमैन ने किया है केस में मुंबई पुलिस कुणाल कामरा से पूछताछ के लिए 2 समन जारी कर चुकी है। वहीं महाराष्ट्र विधान परिषद में भी कामरा के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का नोटिस स्वीकार कर लिया गया है। उधर, शिवसेना सांसद संजय राउत ने कहा कि, जिस तरह भाजपा सांसद कंगना रनोट को शिवसेना से टकराव के बाद सुरक्षा दी गई थी, वैसी ही सिक्योरिटी कुणाल को भी दी जानी चाहिए। राउत ने मुंबई में कहा- मैंने कुणाल कामरा से बोला है कि वो कानून का सामना करें, भागे नहीं। मुंबई पुलिस निष्पक्ष है। कुणाल देश के नागरिक और कलाकार हैं, कोई आतंकवादी नहीं हैं। कुणाल को मद्रास हाईकोर्ट से अग्रिम जमानत मिल गई है। कुणाल ने कोर्ट से कहा था कि वे तमिलनाडु के विल्लुपुरम के रहने वाले हैं। मुंबई गए तो गिरफ्तारी होगी। शिवसेना कार्यकर्ताओं से जान का खतरा है।

प्रयागराज में एयरफोर्स अफसर की हत्या

प्रयागराज (एजेंसी)। प्रयागराज में एयरफोर्स के चीफ इंजीनियर (वर्क) एसएन मिश्रा (50) की गोली मारकर हत्या कर दी गई। वह घर में सोए हुए थे। तड़के 3 बजे हमलावरों ने खिड़की खटखटाकर अफसर को जगाया। जैसे ही उन्होंने खिड़की खोली। हमलावरों ने सीने में गोली मार दी। आवाज सुनकर दूसरे कमरे से परिजन भागकर पहुंचे। तब तक हमलावर फरार हो चुके थे। तुरंत उन्हें मिलिट्री हॉस्पिटल ले जाया गया। वहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। वारदात की सूचना पर एयरफोर्स और पुलिस के सीनियर अफसर मौके पर पहुंचे। फोरेंसिक टीम ने कमरे की जांच की। आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं। पूरी वारदात हाई सिक्योरिटी वाले बमरौली इलाके में सेंट्रल एयर कमांड कैंपस के अंदर बनी कॉलोनी में हुई। कैंपस में नार्थ जोन में चीफ इंजीनियर का आवास है। फिलहाल, आसपास का एरिया सील कर दिया। दो डॉक्टरों के पैनल ने चीफ इंजीनियर का पोस्टमॉर्टम किया है। उनके सीने के बाएं तरफ गोली धंसी मिली, जोकि दिल के ठीक नीचे थी। उनके सिर के पीछे भी गहरी चोट मिली है। परिवार एसएन मिश्रा का शव लेकर बक्सर (बिहार) रवाना हुआ है। वहां पैतृक गांव गोचरा में उनका अंतिम संस्कार होगा।

छत्तीसगढ़ के सुकमा में 17 नक्सलियों का एनकाउंटर

सुकमा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के सुकमा और दंतेवाड़ा जिले की सरहद पर शनिवार सुबह पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई। (डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड) और सीआरपीएफ के 500-600 जवानों ने 17 नक्सलियों को मार गिराया। इनमें 11 महिला नक्सली हैं। मुठभेड़ केरलापाल थाना क्षेत्र के उपमपल्ली में हुई। मारे गए नक्सलियों में नक्सल संगठन स्ँष्टरू- स्पेशल जोनल कमेटी मेंबर जगदीश उर्फ बुधरा भी शामिल है। बुधरा पर 25 लाख का इनाम घोषित था। वह दरभा घाटी के झीरम कांड में शामिल था। 2013 में हुई इस वारदात में कांग्रेस नेता महेंद्र कर्मा समेत कई बड़े कांग्रेसी लीडर मारे गए थे।

नव संवत्सर सभी के जीवन में सुख- समृद्धि और आनंद का भाव लाए-मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारतीय संस्कृति के अंतर्गत पर्व और त्योहारों का निर्धारण मंगल तिथियां के आधार पर होता है। खगोलीय गतिविधियों की दृष्टि से गुड़ी पड़वा अर्थात प्रतिपदा, वर्ष की पहली मंगल तिथि है। इसी आधार पर होली, दीपावली जैसे त्योहारों की तिथियों का निर्धारण होता है। इस मंगल तिथि का अभिवादन कहीं चेटीचंड, कहीं वर्ष प्रतिपदा और कहीं गुड़ी पड़वा सहित अन्य अनेक नाम से किया जाता है। यह प्राचीन सनातन संस्कृति की अनुपम परंपरा है, इसी तिथि पर चंहुओर खुशियों, समृद्धि और हर्षोल्लास का वातावरण होता है। गुड़ी पड़वा पर घर-घर स्थापित होने वाला कलश हमारी पवित्र आत्मा को अभिव्यक्त करता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि समृद्धि और

विकास का नव संवत्सर सभी के जीवन में सुख-समृद्धि और आनंद का भाव लाए, ईश्वर से यही कामना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव, प्रदेश के वृहद मराठी समाज द्वारा गुड़ी पड़वा के संदर्भ में मुख्यमंत्री निवास के सभागार में आयोजित कार्यक्रम को संबांधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का समाज बंधुओं ने मंत्रोच्चार के बीच तिलक कर स्वागत किया और अंगवस्त्र एवं श्रीफल भेंट कर उनका अभिवादन किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को मराठी साहित्य अकादमी, श्री संत सेवा संघ पुणे, पिपलानी गणेश मंडल भोपाल और कोलार महाराष्ट्र मंडल भोपाल की ओर से परम्परागत गुड़ी भेंट की गई। मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने मध्यप्रदेश मराठी साहित्य संघ, भोपाल द्वारा प्रकाशित पत्रिका भोजपत्र का विमोचन भी किया।

सुप्रीम कोर्ट जस्टिस नाथ बोले-नदियों की हालत देख चिंता होती है

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस विक्रम नाथ ने कहा कि देश की नदियां देखकर चिंता होती है। वे गंदगी से भरी पड़ी हैं। मैं जब इन नदियों के किनारों को देखता हूं, तो मुझे पुरानी बातें याद आती हैं। ये पानी कभी कितना जीवंत और शुद्ध था। हम इनका गौरव बचाने में असमर्थ हैं, ये चिंता का विषय है। उन्होंने कहा- दिल्ली में पॉल्यूशन का लेवल हररोज हाई होता है। हम सभी का मानना है कि हमारे बच्चों का ऐसे वातावरण में बड़ा होना कतई मंजूर नहीं, जहां उन्हें बाहर खेलने के लिए भी मास्क की जरूरत, कम उम्र में सांस संबंधी

बीमारियों की चिंता हो। शनिवार को जस्टिस नाथ दिल्ली में विज्ञान भवन में पर्यावरण पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन - 2025 के उद्घाटन कार्यक्रम में पहुंचे थे। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राष्ट्रपति द्रौपदी थीं। कार्यक्रम में देश के अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमणी भी मौजूद थे। मैं जब इन नदियों के किनारों को देखता हूं, तो मुझे पुरानी बातें याद आती हैं चिंता होती है। ये पानी कभी कितना जीवंत और शुद्ध था। हम उन्हें उनकी नेचुरल प्राइड में कंजर्व करने में असमर्थ हैं। ये चिंता का विषय है। इंडस्ट्रियल वेस्ट का ट्रीटमेंट करना, सीवेज के बुनियादी ढांचे को बढ़ाना और लोकल समुदायों को नदी पर स्वच्छता बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करना जरूरी है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने 2010 में अपनी स्थापना के बाद से आशा की किरण के तौर पर उभरा है। पर्यावरण से जुड़े विवादों के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सरकार को ग्रीन टेक्नॉलोजिस को प्रोत्साहित करना चाहिए। इंडस्ट्रीज को अपने एनवायॅरन्मेंट फुट मार्क्स को लेकर सावधान रहना चाहिए।न्यायपालिका स्वस्थ पर्यावरण की संवैधानिक गारंटी को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

कोई भी संस्था अकेले पर्यावरण संरक्षण के विशाल कार्य को पूरा नहीं कर सकती।

कांग्रेस बोली- मोदी सरकार ने बैंकों को कलेक्शन एजेंट बनाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने शनिवार को कहा कि मोदी सरकार ने बैंकों को कलेक्शन एजेंट में बदल दिया है। सरकार सर्विस के नाम पर आम लोगों से पैसे लूट रही है। उन्होंने कहा- 2018 से 2024 के बीच बचत और जनधन खातों में मिनिमम बैलेंस न रखने पर सरकार ने जनता से करीब 43,500 करोड़ वसूले हैं। दरअसल, भारतीय रिजर्व बैंक ने एटीएम से पैसे निकालने पर 28 मई को फीस बढ़ाने का सर्कुलर जारी किया। सर्कुलर के मुताबिक 1 मई से ग्राहकों को एटीएम से मंथली फ्री ट्रांजैक्शन लिमिट पार करने पर अगले ट्रांजैक्शन के लिए एडिशनल 2 रुपए का भुगतान करना होगा। यह होम बैंक और दूसरे बैंकों में अलग-अलग होगी। मेट्रो सिटीज में होम बैंक (जिस बैंक में आपका अकाउंट है) से फ्री एटीएम ट्रांजैक्शन लिमिट 5 है। इसके बाद के ट्रांजैक्शन पर आपको 2 रुपए अधिक चार्ज देना होगा। फिलहाल यह चार्ज 21 रुपए है, जो 1 मई से 23 रुपए होगी।इससे पहले 25 मार्च को आरबीआई ने एटीएम इंटरचेंज फीस बढ़ाई थी। यानी अगर आप किसी दूसरे बैंक के एटीएम से फ्री लिमिट से ज्यादा बार ट्रांजैक्शन करते हैं तो आपको 2 रुपए अधिक चार्ज देने होंगे। पहले ये 17 रुपए था, जिसे बढ़ाकर 19 रुपए कर दिया गया है। मेट्रो सिटीज में दूसरे बैंक से फ्री ट्रांजैक्शन लिमिट 3 है।

पश्चिम बंगाल के मालदा में हिंसा- इंटरनेट बंद, 34 गिरफ्तार

मालदा (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के मालदा जिले के मोथाबाड़ी में 27 मार्च को दो गुटों के बीच हुई हिंसा मामले में 34 उपद्रवियों को गिरफ्तार किया गया है। घटना के बाद से इलाके में इंटरनेट बंद है। आर्म्ड और रैपिड एक्शन फोर्स की तीन कंपनियां तैनात की गई हैं।

हिंसा को लेकर कलकत्ता हाईकोर्ट ने शुक्रवार को डीएम और एसपी से 3 अप्रैल तक एक्शन रिपोर्ट मांगी है। कोर्ट ने कहा कि राज्य को सावधानी से काम करना चाहिए। साथ ही हिंसा से प्रभावित लोगों की सुरक्षा के लिए उचित कदम उठाने चाहिए। रिपोर्ट्स के मुताबिक 26 मार्च को मोथाबाड़ी मस्जिद में नमाज हो रही थी। इस दौरान वहां से एक जुलूस गुजर रहा था, तभी कुछ लोगों ने धार्मिक नारे लगाए। 27 मार्च को दूसरे समुदाय ने इसका विरोध किया। इस दौरान भीड़ ने दुकानों, घरों और गाड़ियों में तोड़फोड़ और लूट की। पुलिस ने लाठीचार्ज किया, आंसू गैस के गोले छोड़े स्थानीय लोगों के मुताबिक 27 मार्च को विरोध प्रदर्शन के दौरान लोगों के हाथ में धार्मिक झंडे थे। नारेबाजी कर रहे लोग अचानक हिंसक हो गए और दुकानों, घरों में तोड़-फोड़ की, सामान लूटा और सड़कों पर खड़ी गाड़ियों में आग लगा दी।

जम्मू के कठुआ में सेना-आतंकियों के बीच फिर एनकाउंटर शुरू

कठुआ (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले के सोफियान जंगल इलाके में तीसरे दिन फिर से सेना और आतंकियों के बीच मुठभेड़ शुरू हो गई है। सुरक्षाबलों ने इलाके की घेराबंदी कर दी है और सर्च ऑपरेशन को तेज कर दिया गया। सूत्रों के मुताबिक, सोफियान जंगल इलाके में 4 से 5 आतंकियों के छिपे होने की सूचना मिलने के बाद सुरक्षाबलों ने सर्च ऑपरेशन शुरू किया, जिसके दौरान फायरिंग शुरू हो गई। 27 मार्च से चल रहे एनकाउंटर में अब तक 2 आतंकी मारे गए। इसके अलावा सुरक्षाबलों के चार जवान शहीद हुए हैं और तीन अन्य घायल हैं। डीजीपी नलिन प्रभात ने बताया- आतंकवादियों के खात्मे तक ऑपरेशन जारी रहेगा। 4 जवान शहीद, 3 जवान घायल 28 मार्च को ऑपरेशन ग्रुप (स्ह्वत्त) के जवान तारिक अहमद, जसवंत सिंह, जगबीर सिंह और बलविंदर सिंह की गोली लगने से मौत हो गई थी। वहीं, डीएसपी धीरज सिंह समेत तीन जवानों का इलाज जारी है। डिप्टी सीएम सुरिंदर चौधरी मुठभेड़ में घायल पुलिसकर्मियों का हालचाल जानने के लिए जम्मू मेडिकल कॉलेज पहुंचे थे।

आंध्र सीएम ने वक्फ प्रॉपर्टीज की सुरक्षा का वादा किया

अमरावती (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने वक्फ प्रॉपर्टीज की सुरक्षा का वादा किया। 27 मार्च को विजयवाड़ा में राज्य सरकार की इफ्तार पार्टी में नायडू ने कहा तेलुगु देशम पार्टी ने हमेशा मुसलमानों के साथ न्याय किया है, हम वंचित मुस्लिम परिवारों के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री ने मुसलमानों की आर्थिक स्थिति में बेहतरी के लिए प्रशासन के प्रयासों पर भी जोर दिया और बजटीय आवंटन और कल्याणकारी पहल पर बात की। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने अल्पसंख्यक समुदायों के उत्थान के लिए 2025-26 के बजट में 5,300 करोड़ रुपए आवंटित किए हैं। वक्फ संशोधन बिल के खिलाफ ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड आज आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में प्रदर्शन करने की तैयारी में है।

नायडू ने सरकारी आदेश 43 से जुड़े विवाद पर कहा कि जब लह्न 43 पेश किया गया, तो अनावश्यक विवाद पैदा हो गया। मामला के

अदालत में पहुंचने के बाद, वक्फ बोर्ड के कामकाज में बाधा उत्पन्न हुई। जैसे ही हमारी सरकार ने कार्यभार संभाला, हमने आदेश को रद्द कर दिया और वक्फ संपत्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए बोर्ड का पुनर्गठन किया।

नायडू ने मुस्लिम धार्मिक नेताओं के मानदेय में भी वृद्धि की घोषणा की और कहा कि इमामों को अब 10,000 रुपए मिलेंगे, जबकि मौजानों को 5,000 रुपए दिए जाएंगे।

गुजरात में सरदार पटेल की 6 बीघा जमीन हड़पी

नडियाद (एजेंसी)। लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की गुजरात के खेड़ा जिले गाडवा गांव में पुरखों की जमीन फर्जीवाड़ा कर हड़पने के मामले में 3 दोषियों को 2 साल कैद की सजा सुनाई गई है। महेमदाबाद कोर्ट के जज विशाल त्रिवेद्री की अदालत ने भूपेन्द्रभाई देसाईभाई डाभी, देसाईभाई जेहाभाई डाभी और प्रतापभाई शकराभाई चौहान को 2 साल कैद की सजा दी है। हालांकि, ट्रायल के दौरान हीराभाई डाभी की मौत हो चुकी है। केस दर्ज होने के करीब 13 साल बाद कोर्ट का फैसला आया। आरोपियों ने 2008 में भी राजस्व रिकॉर्ड में धांधली के जरिए नाम बदलवाने का प्रयास किया था, जो असफल रहा। गाडवा गांव स्थित सरदार पटेल के नाम की 6 बीघा जमीन का मामला खेड़ा जिले के गाडवा गांव में करीब 6 बीघा भूमि जमीन राजस्व रिकॉर्ड में मालिक-कब्जेदार गुजरात प्रांतीय समिति (गुप्रास) और देश के पूर्व गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल का नाम है। राजस्व रिकॉर्ड में 1930-31 से साल 2004 तक था, रिकॉर्ड दुरस्त रहा। 2004 में दस्तावेज के कंप्यूटरीकरण के दौरान कब्जेदार के रूप में नाम 'गुप्रास के प्रमुख वल्लभभाई झवेरभाई पटेल' के नाम के बदले सिर्फ 'वल्लभभाई झवेरभाई' दर्ज हो गया तथा 'गुप्रास के प्रमुख' शब्द निकल गया। यहीं से जालसाज सक्रिय हो गए।

कठलाल के अराल गांव निवासी भूपेन्द्र डाभी ने गांव के ही हीराभाई कलाभाई डाभी को बतौर वल्लभभाई झवेरभाई की जाली पहचान के साथ पेश कर साल 2004-05 अंगूठा लगवाया।

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी गुजरात के केवड़िया (नर्मदा जिला) में स्थित है। यह दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा है।

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी गुजरात के केवड़िया (नर्मदा जिला) में स्थित है। यह दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा है।

लुधियाना में जहरीली गैस का टैंकर पलटा, ड्राइवर ने छलांग लगाकर जान बचाई

लुधियाना (एजेंसी)। पंजाब के लुधियाना में रात साढ़े 12 बजे बस स्टेंड नजदीक एलीवेटेड पुल पर कार्बन डाई आक्साईड गैस से भरा टैंकर अचानक पलट गया। टैंकर किन हालातों में पलटा यह अभी जांच का विषय है। पता चला है कि ड्राइवर से स्टेयरिंग का संतुलन बिगड़ गया जिस कारण अचानक से टैंकर बेकाबू होकर पलट गया। टैंकर चला रहे ड्राइवर ने छलांग लगाकर जान बचाई।

ड्राइवर की भी अभी पहचान नहीं पो पाई। टैंकर गिरने के कारण अचानक से गैस रिसाव होने लगा। बस स्टेंड नजदीक काफी इलाके को पुलिस ने बंद किया हुआ था। ट्रैफिक पुलिस ने मौके पर पहुंच जेसीबी बुलाई जिसकी मदद से टैंकर को सड़क से हटाया।

ड्राइवर मंटू ने कहा कि वह बठिंडा से टैंकर लेकर आया था। उसने शेरपुर में टैंकर अनलोड करना था। पुल पर अचानक टैंकर के टायर का पिन टूट गया जिस कारण स्टेयरिंग का संतुलन बिगड़ गया। हादसे में उसकी आंख के नजदीक चोट आई है। राहगीरों की मदद से उसे टैंकर से बाहर निकाला गया। उसने तुरंत पुलिस और टैंकर के मालिक को फोन कर सूचित कर दिया था। घटना स्थल पर पहुंच सबसे पहले ट्रैफिक को रोका गया। गनीमत

रही कि टैंकर टक्कर खाकर पलट गया अन्यथा पुल के नीचे यदि गिरता तो ज्यादा नुक्सान हो जाना था। फिलहाल ड्राइवर को प्राथमिक उपचार दिया गया है। जेसीबी क्रेन की मदद से टैंकर को सड़क से हटा दिया है। ड्राइवर का पता नोट कर लिया है। इस मामले की जांच जारी है।

हिमाचल में 2 पावर प्रोजे ट लगाएगा तेलंगाना

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश ने आज शिमला में तेलंगाना सरकार के साथ लाहौल-स्पीति में स्थापित होने वाली 400 मेगावाट सेली और 120 मेगावाट मियार जल विद्युत परियोजनाओं के लिए समझौता ज्ञापन (स्ह्व) साइन किए। प्रदेश में पहली बार तेलंगाना सरकार पावर प्रोजेक्ट स्थापित करने जा रही है। इन एमओयू पर मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू और तेलंगाना के उप-मुख्यमंत्री भट्टी विक्रमार्क मल्लू की मौजूदगी में हिमाचल सरकार की ओर से ऊर्जा सचिव राकेश कंवर तथा तेलंगाना सरकार की ओर से प्रधान सचिव ऊर्जा संदीप कुमार सुल्तानिया ने हस्ताक्षर किए। यह दोनों परियोजनाएं चिनाब नदी पर 6200 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से स्थापित की जाएगी। इनमें लगभग 5000 लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष तौर पर रोजगार मिलेगा। एमओयू के अनुसार, तेलंगाना सरकार ने अग्रिम प्रीमियम राशि के रूप में 26 करोड़ रुपए का भुगतान कर दिया है।

इन परियोजनाओं के शुरू होने के बाद हिमाचल को कुल बिजली उत्पादन में से शुरुआती 12 सालों तक 12 प्रतिशत, अगले 18 सालों तक 18 प्रतिशत और आखिरी 10 सालों तक 30 प्रतिशत मुफ्त बिजली दी जाएगी। 40 सालों की अवधि पूर्ण होने के बाद तेलंगाना सरकार इन दोनों परियोजनाओं को हिमाचल प्रदेश को सौंपेगी। इसके अतिरिक्त, तेलंगाना सरकार इन दोनों परियोजनाओं की लागत का 1.5 प्रतिशत स्थानीय क्षेत्र विकास निधि पर तथा इसके अतिरिक्त लागत का एक प्रतिशत इस क्षेत्र को नि:शुल्क विद्युत प्रदान करने पर व्यय करेगी।

इंपैक्ट प्लेयर नियम के कारण वॉशिंगटन सुंदर जैसे ऑलराउंडरों को हो रहा नुकसान

मुम्बई (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में इंपैक्ट प्लेयर से ऑलराउंडरों को होने वाले नुकसान की आशंका जतायी जा रही थी। जो कुछ हद तक गुजरात टाइटंस के वॉशिंगटन सुंदर जैसे खिलाड़ियों को देखकर सही साबित होती नजर आ रही है जो अब तक बाहर बैठै हुए हैं। इंपैक्ट प्लेयर को रखने के कारण हर टीम 11 की जगह 12 खिलाड़ियों को उतार रही है। जिसके कारण कई ऑलराउंडर टीम में जगह नहीं हासिल कर पा रहे क्योंकि टीम 12वें खिलाड़ी के रूप में एक स्पेशलिस्ट बल्लेबाज या गेंदबाज का चयन करती है। इसमें ऑलराउंड्स पीछे हो जाते हैं। ऐसा ही कुछ सुंदर के साथ भी हुआ है। 2017 से आईपीएल खेल रहे इस ऑलराउंडर ने अभी तक आईपीएल में कुल 60 मैच खेले हैं पर जब से टूर्नामेंट में इंपैक्ट प्लेयर का नियम आया है तब से उन्हें 22 में से केवल 9 ही मैच में खेलने को मिले हैं। इस प्रकार वह 59 फीसदी मैचों में बाहर ही रहे हैं। नजर आईपीएल 2023 में सुंदर को 7 तो पिछले सीजन 2024 में उन्हें सिर्फ 2 ही मैच खेलने का मौका मिला है। सुंदर को पंजाब किंग्स के खिलाफ पहले मुकाबले में जब अवसर नहीं मिला तो प्रशंसक काफी हैरान नजर आए। एक प्रशंसक ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लिखा।

अंतिम समय शॉट बदल देते हैं अभिषेक- विलियमसन

ऑकलैंड (एजेंसी)। न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान केन विलियमसन ने आईपीएल में शानदार बल्लेबाजी कर रहे युवा बल्लेबाज अभिषेक शर्मा की जमकर प्रशंसा की है। विलियमसन ने कहा है कि अभिषेक में अंतिम समय में शॉट्स बदलने और मैदान के चारों ओर शॉट खेलने की अच्छी क्षमता है। विलियमसन ने कहा कि उनके पास बेहतरीन बैट स्विंग है और वो गेंद को स्वाभाविक तरीके से खेलता है। अभिषेक आईपीएल आईपीएल के इस सत्र में सनराइजर्स हैदराबाद टीम की ओर से खेल रहे हैं। जिसे इस टीम ने आईपीएल के 18वें सीजन के लिए रिटेन किया था। अभिषेक शर्मा टी20 प्रारूप के बेहद खतरनाक बल्लेबाज हैं और इसकी क्या वजह से इसके बारे में हैदराबाद के पूर्व कप्तान केन विलियमसन ने बताया।

इस अनुभवी बल्लेबाज ने कहा कि अभिषेक के पास गेंद को टाइम करने और मैदान के चारों तरफ खेलने की जो क्षमता है वह हेनरिक क्लासेन जैसी है। सबसे बड़ी खूबी है कि वो आखिरी मिनट में अपने शॉट को बदल देते हैं क्योंकि वो ओवरहिटिंग नहीं करते हैं और ये एक ऐसा कौशल है जो कुछ ही बल्लेबाजों के पास है। उन्होंने कहा कि जब हैदराबाद ने अभिषेक को आईपीएल 2019 से पहले दिल्ली कैपिटल्स से खरीदा था तब से ही लगा था कि उनमें गजब की प्रतिभा है, भले ही उन्होंने इससे पहले सिर्फ 3 मैच आईपीएल में खेले थे।

शार्दुल के आईपीएल में 100 विकेट पूरे

हैदराबाद (एजेंसी)। पिछले काफी समय से भारतीय टीम से बाहर चल रहे तेज गेंदबाज शार्दुल ठाकुर ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में लखनऊ सुपर जायंट्स की ओर से खेलते हुए शानदार वापसी की है। शार्दुल ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ मैच में 32 रन देकर चार विकेट लेकर अपनी टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई है। इससे पहले शार्दुल ने दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ के खिलाफ पहले मुकाबले में भी दो विकेट लिए हैं। इस प्रकार दो मुकाबलों में छह विकेट लेकर वह पर्पल रंग की कैप के अधिकारी बन गये हैं। इस मैच में शार्दुल ने अपने आईपीएल करियर में 100 विकेट भी पूरे किये।

अपनी इस उपलब्धि पर शार्दुल ने कहा कि मुझे लगता है कि क्रिकेट में ये सब होता है। नीलामी के समय उस जब मुझे किसी भी फ्रैंचाइजी ने नहीं लिया तो मैं निराश था। सुपर जायंट्स ने अपने गेंदबाजों के फिट नहीं होने के कारण सबसे पहले मुझसे संपर्क किया था, इसलिए मैंने उसकी टीम में ही जाना तय किया। क्रिकेट में आपको ऐसी चीज़ों को झेलना पड़ता है।

शार्दुल ने कहा कि मेरे लिए खेल में जीतना अहम है। मैं विकेट या रनों की जगह ये देखता हूं कि क्या प्रभाव डाल सकता हूं।

एलएसजी के मालिक संजीव गोयनका जीत से हुए बेहद खुश

नई दिल्ली (एजेंसी)। आरपीएसजी ग्रुप के संस्थापक और अध्यक्ष गुरुवार को मुस्कुराते हुए दिखे, जब उन्होंने मौजूदा कप्तान ऋषभ पंत को गले लगाया, क्योंकि एलएसजी ने मौजूदा आईपीएल 2025 के अपने दूसरे गेम में एसआरएच को पांच विकेट से हराया। हैदराबाद की पिच पर पंत द्वारा पहले गेंदबाजी करने के फैसले ने लोगों को चौंका दिया।

इंडियन प्रीमियर लीग 2025 में एक वर्ष में ही कुछ ऐसा हो गया जिसकी उम्मीद फैंस को अधिक नहीं थी। लखनऊ सुपर जायंट्स के डगआउट में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ मैच के बाद दो विपरीत दृश्य देखने को मिले। 2024 में लखनऊ सुपर जायंट्स को 2016 के चैंपियन के खिलाफ घरेलू मैदान पर हार का सामना करना पड़ा था। इस घटना पर टीम के मालिक संजीव गोयनका ने तत्कालीन कप्तान केएल राहुल को लेकर कड़ी प्रतिक्रिया दी थी, जो काफी सुर्खियों मे आया था।

हालांकि, आरपीएसजी ग्रुप के संस्थापक और अध्यक्ष गुरुवार को मुस्कुराते हुए दिखे, जब उन्होंने मौजूदा कप्तान ऋषभ पंत को गले लगाया, क्योंकि एलएसजी ने मौजूदा आईपीएल 2025 के अपने दूसरे गेम में एसआरएच को पांच विकेट से हराया। हैदराबाद की पिच पर पंत द्वारा पहले गेंदबाजी करने के फैसले ने लोगों को चौंका दिया, खासकर तब जब सनराइजर्स ने राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ पहले मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए 286 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया था।

हालाँकि, शार्दुल ठाकुर की अगुवाई में गेंदबाजों ने इस फैसले को सही साबित किया और मेजबान टीम को 20 ओवर में नौ विकेट पर 190 रन पर रोक दिया। पिछले साल नीलामी में अनसोल्ड रहने वाले और आखिरी समय में लखनऊ के साथ आईपीएल अनुबंध हासिल करने वाले इस ऑलराउंडर ने चार विकेट चटकाए। निकोलस पूरन और मिशेल मार्श ने सनराइजर्स के गेंदबाजी आक्रमण के खिलाफ आक्रामक प्रदर्शन किया और लगातार दूसरा अर्धशतक जमाया जिससे लखनऊ ने 23 गेंद शेष रहते लक्ष्य हासिल कर लिया।

मैच के बाद गोयनका खुद को रोक नहीं पाए और उन्होंने पंत को कसकर गले लगा लिया। टीम के मेंटर जहीर खान यह दृश्य देखकर मुस्कुराने से खुद को नहीं रोक पाए। मैच के बाद की प्रस्तुति से पहले तीनों ने एक छोटी सी बातचीत की। यह दृश्य उस घटना के कुछ दिन बाद आया जब गोयनका को चाय के बाद पंत के साथ बातचीत करते हुए देखा गया था और टीम को विजाग में अपने पहले मैच में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ दिल तोड़ने वाली हार का सामना करना पड़ा था, जिससे प्रशंसकों को केएल राहुल जैसी स्थिति का डर सता रहा था।

गौरतलब है कि पिछले साल काफी आलोचनाओं के बाद राहुल और गोयनका के बीच रिश्ते खराब हो गए थे, जिसके बाद नवंबर में नीलामी से पहले राहुल ने फ्रैंचाइजी से नाता तोड़ लिया था। उन्हें दिल्ली ने 14 करोड़ रुपये में खरीदा था। पंत ने माना कि एलएसजी के कप्तान के तौर पर पहली जीत हासिल करना उनके लिए बड़ी राहत की बात है। उन्होंने ठाकुर के प्रदर्शन और प्रिंस यादव की भी तारीफ की, जिन्होंने आईपीएल में अपने डेब्यू मैच में टैविस हेड को आउट किया।

उन्होंने कहा, बड़ी राहत की बात है, लेकिन एक टीम के तौर पर हम प्रक्रिया के बारे में बात करते हैं। यह जीतने पर बहुत अधिक उत्साहित होने और हारने पर बहुत अधिक निराश होने के बारे में नहीं है। एक टीम के तौर पर हम अनियंत्रित चीजों पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकते, मेरे गुरु ने कहा कि नियंत्रणीय चीजों पर ध्यान केंद्रित करो और मैंने वही किया। प्रिंस ने जिस तरह से गेंदबाजी की, उसे देखकर अच्छा लगा और ठाकुर ने भी वास्तव में अच्छा प्रदर्शन किया।

बल्लेबाजों के बेखौफ खेल से पावरप्ले में बन रहे हैं बड़े स्कोर-पार्थिव पटेल

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरात टाइटंस के सहायक कोच पार्थिव पटेल ने शुक्रवार को कहा कि बल्लेबाजों में खौफ नहीं होने से इंडियन प्रीमियर लीग में पावरप्ले के दौरान बड़े स्कोर बन रहे हैं। भारत के पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज ने कहा कि उनके खेलने के दिनों में आईपीएल टीमों का पावरप्ले में स्कोर 45 रन के आसपास रहता था और साइडआर्म थ्रो विशेषज्ञों ने भी बल्लेबाजों की रफ्तार से सामंजस्य बिठाने में मदद की है। मुंबई इंडियंस के खिलाफ शनिवार को होने वाले मैच से पहले मीडिया से बातचीत में पटेल ने कहा ,'' इसमें कोई शक नहीं। रणनीति बहुत बड़े स्तर पर बनाई जाती है। कुछ

साल पहले जब मैं खेल रहा था तब पावरप्ले का स्कोर 45 के आसपास अच्छा माना जाता था।''

उन्होंने कहा ,'' उसके बाद 50 और फिर 55 से 60 तक हो गया। इसके बावजूद हालात को भी देखना पड़ता है। अगर आप चेन्नई में खेल रहे हैं तो 150 अच्छा स्कोर है और वहां टीम से पावरप्ले में 70 या 80 रन की उम्मीद नहीं की जाती।'' उन्होंने कहा ,'' लेकिन अगर सभी मैचों को देखें तो 70 रन मानदंड है। आप किन्हीं भी हालात में खेले लेकिन बेंचमार्क 45 से ऊपर चला गया है।'' पटेल ने कहा ,'' अब बल्लेबाज डरते नहीं हैं। वे बेखौफ होकर खेलते हैं। उनकी सहायता के लिये विशेषज्ञ मौजूद हैं। हर कोई चौके लगाने में सक्षम है। साइडआर्म विशेषज्ञों से भारत के घरेलू क्रिकेटरों को काफी मदद मिली है क्योंकि आम तौर पर आप 140 किमी प्रति घंटे की रफ्तार की गेंद का सामना नहीं करते।

जानें कौन हैं प्रिंस यादव? ट्रेविस हेड का लिया विकेट, दिल्ली से है नाता

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 में सनराइजर्स हैदराबाद और लखनऊ सुपर जायंट्स के बीच मुकाबला खेला जा रहा है। जहां लखनऊ सुपर जायंट्स के गेंदबाज प्रिंस यादव ने हैदराबाद के स्टार खिलाड़ी ट्रेविस हेड को बोल्ड कर चारों तरफ वाहवाही लुट ली है। जो कि उनके आईपीएल करियर की बेहतरीन शुरुआत बताई जा रही है।

प्रिंस ने इस सत्र में ही डेब्यू किया है। लखनऊ के कप्तान ऋषभ पंत ने युवा गेंदबाज को दिल्ली टैपिटल्स के खिलाफ मुकाबले में मौका दिया। पहले मैच में भले ही वह कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाए लेकिन अपने आईपीएल करियर के दूसरे मैच में प्रिंस ने ट्रेविस हेड को बोल्ड कर अपना लोहा मनवाया है। उन्हें ये सफलता एसआरएच की पारी के आठवें ओवर की तीसरी गेंद पर मिला।

23 वर्षीय तेज गेंदबाज प्रिंस दिल्ली से ताल्लुक रखते हैं। दिल्ली प्रीमियर लीग 2024 में पांचवें सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं। उनके नाम डीपीएल में लगातार तीन विकेट लेने का रिकॉर्ड दर्ज है। वह ऐसा करने वाले इकलौते गेंदबाज हैं। पुरानी दिल्ली 6 के लिए खेलते हुए उन्होंने 10 मैचों में 13 विकेट अपने नाम किए हैं।

प्रिंस ने आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी से पहले सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में उत्तर प्रदेश के खिलाफ अपने करियर का पहला टी20 मुकाबला खेला था। इसके अगले ही दिन लखनऊ सुपर जायंट्स ने उन्हें 30 लाख रुपये के आधार मूल्य पर टीम में शामिल कर लिया। एसएमएटी 2024-25 के सत्र में प्रिंस ने 7.54 के इकोनॉमी रेट से 11 विकेट हासिल किए थे। इसके बाद वह 50 ओवरों की विजय हजारे ट्रॉफी में भी दिल्ली के लिए सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज रहे। उन्होंने 6 मैचों में 22.00 की औसत से 11 विकेट अपने नाम किए।

ईशान के आउट होते ही मायूस हुई काव्या

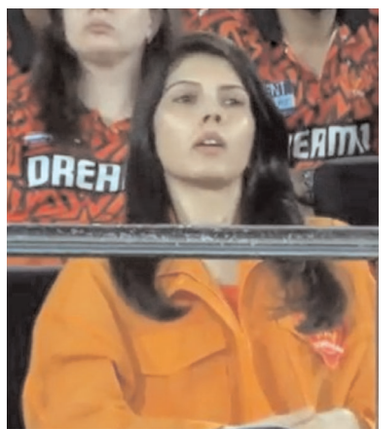

नई दिल्ली (एजेंसी)। सनराइजर्स हैदराबाद के सलामी बल्लेबाज ईशान किशन आईपीएल के दूसरे ही मैच में लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ खाता खोले बिना ही पेवेलियन लौट गये। इस मैच में ईशान के आउट होते ही टीम की मालकिन काव्या मारन मायूस नजर आयीं। काव्या को पहले मैच की तरह इस मैच में भी ईशान से आक्रामक पारी की उम्मीद थी पर वह शार्दुल ठाकुर का शिकार बन गये। काव्या दूसरे मैच में भी अपनी टीम का हौंसला बढ़ाने के लिए दर्शकों के बीच बैठीं थी। शार्दुल ने तीसरे ओवर की पहली गेंद पर सलामी बल्लेबातज अभिषेक शर्मा को आउट किया। इसके बाद दूसरी गेंद पर ईशान किशन को शिकार बनाया। ईशान ने पहले मैच में शतक लगाया था। ईशान किशन को 2024 में मेगा नीलामी से पहले मुंबई इंडियंस ने रिलीज़ कर दिया था। राजस्थान के खिलाफ ईशान ने 107 रन बनाए थे जो आईपीएल में उनका पहला शतक था। ईशान ने साल 2016 में गुजरात लायंस के लिए अपना आईपीएल डेब्यू किया था, जिसके बाद 2018 में मुंबई ने उन्हें 6.20 करोड़ में खरीदा था।

वरुण के साथ गेंदबाजी करना बेहतर अनुभव रहा-मोइन

गुवाहाटी (एजेंसी)। आईपीएल में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) की ओर से खेल रहे इंग्लैंड के स्पिनर मोइन अली ने भारतीय स्पिनर वरुण चक्रवर्ती की प्रशंसा करते हुए कहा है कि उनके साथ गेंदबाजी करने का अनुभव अच्छा रहा है क्योंकि वह मुझसे बेहतर गेंदबाज है। के मोइन ने कहा कि वरुण के होने से मेरा काम काम रन गति पर लगाम कसना है जिससे कि वह दबाव बना सके और विकेट ले सके। साथ ही कहा कि मैं ऐसे व्यक्ति के साथ गेंदबाजी करने का आदी हूं जो मेरे से बेहतर है और जिसमें मेरे से अधिक विविधता है। मेरा काम जितना हो सके उतनी कसी हुई गेंदबाजी करना है और उम्मीद है कि इससे दबाव बनेगा और वह व्यक्ति विकेट ले सकेगा। जैसा कि हम जानते हैं कि वरुण बेहतरीन गेंदबाजी कर रहा हैं और वह एक शानदार गेंदबाज है। पिछले दो-तीन वर्षों में उसमें बहुत सुधार हुआ है। ऐसे गेंदबाज के साथ गेंदबाजी करना काफी अच्छा अनुभव है।

मोईन ने रॉयल्स के खिलाफ चार ओवर में 23 रन पर दो विकेट लिए जबकि उनके युवा स्पिन साथी चक्रवर्ती ने भी चार ओवर में 23 रन देकर दो विकेट हासिल किए। वहीं केकेआर के स्पिनरों के विपरीत रॉयल्स के स्पिनर महेश तीक्षणा और वानिंदु हसरंगा धीमे गेंदबाजों की मदद करने वाली पिच पर उम्मीदों पर खरे नहीं उतर सके। रॉयल्स के स्पिन गेंदबाजी कोच साईराज बहुतुले ने कहा, 'हमारे पास हसरंगा और तीक्षणा जैसे स्पिनर हैं जो निश्चित रूप से विश्व स्तरीय अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी हैं। कई बार (मैच के दौरान) मुझे लगा कि उन्होंने शॉर्ट गेंदबाजी की जबकि अगर वह ऐसा नहीं करते तो स्पिनरों को निश्चित रूप से मदद मिलती।

ऋषभ बोले, सभी को अपनी शैली में खेलने की आजादी दी थी

हैदराबाद (एजेंसी)। लखनऊ सुपरजायंट्स के कप्तान ऋषभ पंत आईपीएल के दूसरे ही मैच में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ मिली जीत से बेहद उत्साहित दिखे। सुपरजायंट्स ने इस मैच में पांच विकेट से जीतकर अपना खाता खोला है। पहले मैच में उसे करीबी अंतर से दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ हार मिली थी पर इस मैच में टीम ने कोई गलती नहीं की। ऋषभ ने कहा कि वह जीत से बहुत अधिक उत्साहित और हार से बहुत ज्यादा निराश नहीं होना चाहते थे। साथ ही कहा कि सभी खिलाड़ियों को अपनी शैली के साथ खेलने की आजादी दी गयी थी जिसका उन्हें लाभ मिला।

इस जीत के साथ ही लखनऊ की टीम अंक तालिका में दूसरे स्थान पर पहुंच गयी है। वहीं सनराइजर्स छठे नंबर पर खिसक गयी है। इस मैच में शार्दुल ठाकुर की शानदार गेंदबाजी (चार विकेट) और निकलस पूरन के 70 रनों के अलावा मिचेल मार्श के 52 रनों की पारी की भी सुपरजायंट्स की जीत में अहम भूमिका रही।

ऋषभ ने मैच के बाद कहा, ' इस जीत से हमें काफी राहत मिली है। इससे एक टीम के रुप में हम उभरकर आये हैं हालांकि अब हम जीत के बाद बहुत ज्यादा उत्साहित और हारने के बाद बहुत ज्यादा निराश नहीं होना चाहते। केवल एक बार में हम केवल एक मैच के बारे में ही सोचते हैं।' ऋषभ ने शार्दुल की भी जमकर प्रशंसा की उन्होंने कहा कि टीम में सभी को अपने अनुसार खेलने की आजादी है जिसका सकारात्मक परिणाम देखने को मिला है। ऋषभ ने निकोलस पूरान की आक्रामक पारी को लेकर कहा कि उन्हें पूरी आजाद दी गयी थी जिसका उन्होंने पूरा लाभ उठाया।

मैहर में मां शारदा मंदिर में नौ दिवसीय नवरात्रि मेले की तैयारियां पूरी

मंदिर परिसर छह जोन में बंटा, 375 पुलिसकर्मी तैनात

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मैहर में चैत्र नवरात्रि के अवसर पर मां शारदा मंदिर परिसर में सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए मंदिर परिसर को 6 जोन में विभाजित किया गया है और सुरक्षा के लिए 50 से अधिक ड्यूटी प्वाइंट बनाए गए हैं। पुलिस कर्मी हर क्षेत्र में निगरानी रखेंगे ताकि किसी भी तरह की अव्यवस्था न हो।

मंदिर परिसर में एक कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है, जहां एलईडी स्क्रीन पर सीसीटीवी कैमरों से सभी गतिविधियों पर नजर रखी जाएगी। इस बार पहली बार बाइक पेट्रोलिंग की व्यवस्था भी की गई है। यह सुविधा यातायात व्यवस्था और पहाड़ी मार्ग पर चलने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए शुरू की गई है।

नवरात्रि मेले के दौरान 375 पुलिस कर्मियों को तैनात किया गया है। इनमें 4 डीएसपी रैंक के अधिकारी बाहर से बुलाए गए हैं। सुरक्षा व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त बनाए रखने के लिए पुलिस बल दो शिफ्टों में काम करेगा। वहीं, प्रशासनिक अधिकारी कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में मेला क्षेत्र की व्यवस्थाओं का निरीक्षण करेंगे।

रविवार से शुरू हो रहे नवरात्रि पर्व के लिए श्रद्धालुओं का आगमन शनिवार से ही प्रारंभ हो गया है। मां शारदा का आशीर्वाद लेने के लिए हजारों भक्त मैहर पहुंच चुके हैं। नवरात्रि के पहले दिन मंदिर के पट सुबह 3 बजे खुलेंगे और पहली आरती सुबह 4 बजे होगी।

रीवा के स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में पार्थ योजना का हुआ शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्य प्रदेश सरकार ने युवाओं को भारतीय सेना, पुलिस और अर्धसैनिक बलों में करियर बनाने के लिए एक नई योजना शुरू की है, जिसे पार्थ नाम दिया गया है, जिसकी शुरुआत रीवा के स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह द्वारा की गई। दरअसल पार्थ योजना का उद्देश्य युवाओं को रोजगार के लिए अवसर प्रदान करना है। यह योजना विशेष रूप से उन युवाओं को ध्यान में रखकर बनाई गई है जो भारतीय सेना पुलिस और अर्धसैनिक बलों में शामिल होना चाहते हैं। इसके तहत युवाओं को भर्ती पूर्व प्रशिक्षण दिया जाएगा। जिसमें शारीरिक फिटनेस और लिखित परीक्षा की तैयारी शामिल है। वहीं कार्यक्रम के दौरान पुलिस अधीक्षक ने खेलो बढ़ो अभियान की शुरुआत भी की है। जिसके तहत जिले के ज्यादा से ज्यादा युवक और युवतियों को खेलों से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा।

कक्षा 6वीं के छात्र ने अपहरण किए जाने का आरोप लगाया

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा शहर के सिविल लाइन थाना क्षेत्र के ढेकाहा मोहल्ले में कक्षा 6वीं के छात्र ने अपहरण किए जाने का आरोप लगाया है। परिजनों सहित छात्र सिविल लाइन थाने पहुंकर घटना की शिकायत दर्ज कराई गई है। घटना के संबंध में आरव विश्वकर्मा पिता सूरज विश्वकर्मा निवासी ढेगाहा ने बताया कि वह दुकान से अपने घर बीती शाम करीब 7 बजे पैदल जा रहा था, जैसे ही वह भाजपा कार्यालय के पीछे वाली गली में पहुंचा तभी उसे बाइक सवार दो युवक मिले, जो उसका मुंह दबाकर जबरन हाथ पकड़ कर बाइक में बैठा कर ले गए। आरव ने बताया कि उसे रेलवे स्टेशन की तरफ ले जाया गया जहां दोनों युवक उसके पिता का नंबर मांग रहे थे उसने नंबर नहीं दिया तो छात्र को वहीं पर बैठाये रहे। किसी तरह छात्र मौका पाकर वहां से भाग निकला और दौड़ते हुए अपने घर पहुंचा। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

वाटर पार्क से लौटते वक्त हुआ हादसा

नहर में गिरी बाइक,दो छात्रों की डूबने से मौत

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में मेडिकल कॉलेज के पास शनिवार को नहर में बाइक गिरने से दो छात्रों की मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज जारी है। चारों छात्र ऱ्यस यूनिवर्सिटी के हैं और वाटर पार्क से लौटते वक्त हादसा हुआ।

जानकारी के मुताबिक, चारों छात्र दो बाइकों पर सवार होकर मेडिकल कॉलेज के पास से गुजर रहे थे। इसी दौरान एक बाइक अनियंत्रित होकर नहर में जा गिरी। अपने दोस्तों को बचाने के लिए दूसरी बाइक पर सवार दो छात्र भी नहर में कूद पड़े, लेकिन यह बचाव प्रयास उनके लिए घातक साबित हुआ। इस घटना में अनुराग सिंह और विकास पांडेय की डूबने से मौत हो गई, जबकि अग्र सिंह परिहार और ऋषभ सिंह को गंभीर चोटें आई हैं।

घायल अग्र सिंह परिहार ने बताया कि हम चारों वाटर पार्क से लौट रहे थे। दो बाइक पर दो-दो लोग

बैठे थे, इसी दौरान अनुराग और विकास की बाइक अनियंत्रित होकर नहर में डूब गई। हमने बचाने की कोशिश की, लेकिन हम भी डूबने लगे। जिसके बाद मौके पर मौजूद लोगों ने हमें बचाया, लेकिन अनुराग और विकास की मौत हो गई।

हादसे के बाद स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। कोलगवां थाना पुलिस मौके पर पहुंची और राहत-बचाव कार्य शुरू किया। शवों को नहर से बाहर निकालने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ी, क्योंकि पानी के तेज बहाव के कारण एक शव करीब 100 मीटर दूर जाकर फंस गया था।

मृतक छात्रों के परिजनों को सूचना दे दी गई है, और पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। प्रारंभिक जांच में यह सामने आया है कि हादसा बाइक के असंतुलन के कारण हुआ, लेकिन पुलिस अन्य संभावनाओं की भी जांच कर रही है।

जेठ-जेठानी और बच्चों पर महिला ने लगाया मारपीट का आरोप

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले के रायपुर कर्चुलियान थाना अंतर्गत सिरखिनी निवासी महिला ने अपने जेठ-जेठानी और उनके बच्चों पर मारपीट का आरोप लगाया है। महिला ने मामले की रिपोर्ट रायपुर कर्चुलियान थाने में दर्ज कराई, लेकिन कार्रवाई ना होने पर आज वह पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंची। पीड़िता के मुताबिक उसके पति धर्मेंद्र मिश्रा ने दूसरी शादी कर ली है जबकि वह अपने ससुर रमाकांत मिश्रा के साथ रहती है। महिला ने बताया कि शुक्रवार शाम उसके जेठ-जेठानी सहित बच्चों ने उसके साथ जमकर मारपीट की। इतना ही नहीं उसके प्राइवेट पार्ट में भी चोट पहुंचाई है। महिला ने बताया कि उसने रायपुर कर्चुलियान थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई, लेकिन पुलिस द्वारा अब तक आरोपियों को गिरफ्तार नहीं किया गया जिससे उसकी जान का भी खतरा बना हुआ है।

टीआरएस कॉलेज में रील बनाने वाली छात्राओं पर होगी कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। खुद को फेमस करने और लोगों के बीच चर्चा में बने रहने के लिए युवक-युवतियों में इन दिनों तरह तरह की रील बनाने का खूब क्रेज है। सोशल साइट पर वायरल होने की चाहत में वह स्कूल कॉलेज की गरिमा को भी अनदेखा कर रहे हैं। ऐसा ही ताजा मामला रीवा के ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय से सामने आया है। जहां अध्ययनरत छात्राएं क्लासरूम के अंदर ही फूहड़ गानों में डांस करती नजर आ रही हैं और उसकी रील सोशल साइट पर वायरल है। प्राचार्य अर्पिता अवस्थी ने सोशल मीडिया में वायरल हो रहे लड़कियों के डांस वीडियो के बारे में कहा कि जल्द ही इस पर कार्यवाही की जाएगी और बच्चों के माता पिता को बुलाकर उनसे भी बात की जाएगी। वहीं इस मामले में एबीवीपी के पदाधिकारी पशुपति नाथ ने आंदोलन की चेतावनी है।

बीहर नदी में दंपति द्वारा बच्चे के शव को बहाने से रोका

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर के बिछिया थाना क्षेत्र में बीहर नदी में एक दंपति द्वारा बच्चे के शव को बहाने का प्रयास किए जाने का मामला प्रकाश में आया है। स्थानीय पार्षद की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और उन्हें रोका। पुलिस के मुताबिक वार्ड क्रमांक 45 के पार्षद द्वारा सूचना दी गई थी कि एक दंपति द्वारा बच्चे के शव को कपड़े में लपेटकर बीहर नदी में बहाया जा रहा है जिसके बाद तत्काल पुलिस मौके पर पहुंची और दंपति को रोक लिया। इस दौरान बच्चे को लिए हुए दंपत्ति ने बताया कि वह चित्रकूट के निवासी हैं और उनकी बेटी गांधी मेमोरियल अस्पताल में भर्ती है जहां उसने बच्चे को जन्म दिया था, जिसके बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसी के शव को प्रवाहित करने के लिए वह बिछिया नदी आए हुए थे। पुलिस ने उन्हें नदी में शव प्रवाहित करने से रोक दिया और उसे हिंदू धर्म के रीति-रिवाज के मुताबिक दफनाने की बात कही, जिसके बाद दंपति शव को लेकर वहां से चले गए और मामला शांत हो गया।

गिरदावरी में संशोधन एवं दावा-आपत्ति करने की तिथि 15 अप्रैल तक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बताया है कि किसानों के हित में (डिजिटल फसल सर्वेक्षण) गिरदावरी में संशोधन एवं दावा-आपत्ति करने की अवधि 15 अप्रैल तक बढ़ा दी गयी है। इससे किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूँ की बिर ी के लिये कराये गये पंजीयन की जानकारी और गिरदावरी की जानकारी में आ रहे अंतर में सुधार करवा सकेंगे। गौरतलब है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूं की बिर ी के लिये किसानों द्वारा कराये गये पंजीयन में दी गयी जानकारी और पटवारी द्वारा की गई गिरदावरी में विभिन्नता होने से आयुक्त खाद्य श्री कर्मवीर शर्मा ने आयुक्त अभिलेख को गिरदावरी में संशोधन/दावा आपत्ति करने की अवधि 15 अप्रैल तक बढ़ाये जाने का आग्रह किया था।

सुदर्शन स्कूल के विद्यार्थियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सुदर्शन पब्लिक हायर सेकेंडरी स्कूल आचार्य विनोबा भावे वार्ड क्रमांक 15 सतना के विद्यार्थियों ने 5 वीं और 8 वीं बोर्ड परीक्षा में किया उत्कृष्ट प्रदर्शन ! विद्यालय के प्रबंधक अंशुल कुशवाहा जी ने जानकारी देते हुए बताया कि कक्षा 5 वीं में 98 प्रतिशत एवं कक्षा 8 वीं में 97 प्रतिशत छात्र उत्तीर्ण रहे। विद्यालय के संचालक राजकुमार कुशवाहा जी ने छात्रों को बधाई देते हुए सभी के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए बताया कि कक्षा 5 वीं में अक्ष सिंह ठाकुर ने 93.5 प्रतिशत,अंशिका कुशवाहा ने 89.2 प्रतिशत, अंजली सिंह ने 89.2 प्रतिशत, आर्यू सिंह ने 88.5 प्रतिशत व रिया साकेत ने 88 प्रतिशत अंक अर्जित कर विद्यालय में क्रमशः प्रथम द्वितीय एवं तृतीय, चौथा एवम पांचवा स्थान अर्जित किया। इसी क्रम में कक्षा 8 वीं में पारस विश्वकर्मा ने 89.8 प्रतिशत ,कृष्णा कुमार गुप्ता ने 89.6 प्रतिशत वा लक्ष्मी यादव ने 89.1 प्रतिशत, नवीन कुशवाहा ने 87.5 प्रतिशत, व यश विश्वकर्मा ने 86.8 प्रतिशत अंक अर्जित कर विद्यालय में क्रमशः प्रथम द्वितीय एवं तृतीय, चौथा एवम पांचवा स्थान प्राप्त किया। विद्यार्थियों ने अपनी कड़ी मेहनत और दृण संकल्प से अच्छा परिणाम लाकर अपने माता पिता,शिक्षकों एवं विद्यालय का नाम रोशन किया।

पूर्व कांग्रेस नेता भागीरथ शुक्ला पर हुआ जानलेवा हमला

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले के सिमरिया विधानसभा क्षेत्र के पूर्व कांग्रेस नेता भागीरथ शुक्ला पर जानलेवा हमला हुआ है। उन्हें गंभीर हालत में संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना को लेकर जो जानकारी सामने आई है उसके मुताबिक रेलवे स्टेशन के पार्किंग में भगीरथ शुक्ला बैठे हुए थे, तभी दो संदिग्ध लोगों पर उनकी नजर पड़ी उन्होंने उनसे पूछताछ की तो दोनों बिना कुछ बोले वहां भागने लगे, जब उनका पीछा भागीरथी शुक्ला ने किया तब कुछ दूर जाकर दोनों लोग रुक गए भागीरथी शुक्ला भी अपनी गाड़ी से वहां उतरे तभी वहीं पर घात लगाए बैठे लगभग दो दर्जन लोगों ने धारदार हथियार और पत्थर से हमला कर दिया। इस घटना में वह गंभीर रूप से घायल हुए हैं।

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय में राष्ट्रीय स्तर की शोध कार्यशाला का आयोजन

शोध उद्देश्यों के आधार पर तय होती है आंकड़ों के विश्लेषण की रणनीति

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय रीवा में विकसित भारत अभियान अन्तर्गत राष्टीय शोध कार्यशाला का छठा दिवस पूर्ण हुआ। शोध कार्यशाला के छठवें दिवस भारत के महान शिक्षाशास्त्री एनसीटीई के पूर्व अध्यक्ष एवं देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के शिक्षा संकाय के सेवानिवृत्त विभागाध्यक्ष प्रो. दयानंद सनसनबाल ने बताया कि शोध समस्या में सम्मिलित चर से संबंधित उद्देश्यों को बनाते समय यह आवश्यक है कि संबंधित चर के सभी पहलुओ पर आधारित उद्देश्यों का निर्धारण होना चाहिए। प्रयोगात्मक शोध के संबंध में चर्चा करते हुए उन्होंने बताया की प्रयोगात्मक शोध में अवरोधक चरो को नियंत्रित किया जाना अति आवश्यक है।

विज्ञान एवं चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र के शोध प्रयोगात्मक प्रवृत्ति के होते हैं। प्रयोगात्मक शोध की अवधि सामान्यतः अधिक होती है क्योंकि इस शोध में पहले पूर्व परीक्षण, तत्पश्चात कुछ उपचार एवं अंत में पोस्ट टेस्ट किया जाता है और प्री टेस्ट एवं पोस्ट टेस्ट के आंकड़ों के मीन स्कोर के आधार पर परिवर्तन को आंका जा सकता है तभी इस बात का भी पता चलता है कि दिए गए उपचार का अन्य आदर्श पर सकारात्मक परिवर्तन हुआ है या नहीं। शोध के उद्देश्य की शब्दावली में जिन चरो का प्रयोग हुआ है उन्हीं के आधार पर यह निर्धारित होता है कि कौन सी सांख्यिकी रणनीति का प्रयोग आंकड़ों के विश्लेषण हेतु किया जाएगा। आंकड़े विश्लेषण में प्रयुक्त रणनीति से यह निर्धारित होता है कि शोध की गंभीरता क्या है और उसके निष्कर्ष किस सीमा तक उपयोगी हो सकते हैं। उन्होंने विभिन्न सांख्यिकी रणनीतियों को किन परिस्थितियों में प्रयोग किया जाना है इसको विभिन्न समसामयिक एवं व्यवहारिक जीवन के उदाहरण लेकर स्पष्ट किया। शोध शीर्षक को विकसित करते हुए उपयुक्त उदाहरण के माध्यम से उसके उद्देश्यों का निर्धारण किस प्रकार होगा और किस उद्देश्य में कौन सी सांख्यिकी विश्लेषण विधि का प्रयोग किया जाएगा, इसके संबंध में विस्तार से जानकारी दी। किन परिस्थितियों में टी परीक्षण विधि का प्रयोग होगा एवं किन परिस्थितियों में वैरियेंस विश्लेषण पद्धति एवं को-वैरियेंस विश्लेषण पद्धति एवं उसके विभिन्न प्रकारों का प्रयोग किया जाएगा,इस संबंध में जानकारी यथोचित उदाहरण के साथ दी। उन्होंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित की जाने वाली राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा में सम्मिलित होने वाले प्रतिभागियों को सफलता हेतु जरूरी टिप्स दिए।

उल्लेखनीय है कि यह शोध कार्यशाला 24 मार्च 2025 से चल रही है एवं इसका समापन 03 अप्रैल 2025 को राष्ट्रीय सेमिनार से होगा जिसमें विभिन्न प्रतिभागियों एवं विद्वानों द्वारा अपने शोध कार्यों के निष्कर्ष का प्रस्तुतीकरण शोध पत्रों के माध्यम से जायेगा। इस राष्ट्रीय शोध कार्यशाला में विश्वविद्यालयीन शोधार्थी, रीवा एवं शहडोल संभाग के डाइट फैकल्टी सदस्य, और लघु शोधकर्ता, शिक्षा महाविद्यालय के समस्त अकादम सदस्य एवं एम.एड. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षणार्थी प्रतिभागी के रूप में सहभागिता कर रहे हैं। कार्यशाला में भोज मुक्त विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक आर एस पाण्डेय, प्राचार्य डॉ. आर.एन. पटेल, डॉ. पी.एन. मिश्रा, डॉ. संजीव तिवारी, डॉ. उमेश पाण्डेय, अनूप पाण्डेय, सुषमा मिश्रा, अल्पना सिंह, डॉ कृष्णा् सिंह, डॉ. दीपा अग्निहोत्री, श्रीमती गीता पालीवाल, डॉ. प्रियंका द्विवेदी, माया मिश्रा, डॉ. तृप्ती श्रीवास्तव, श्रीमती नीलम मिश्रा, स्मिता अग्निहोत्री,सुचिता शर्मा, प्रतिभा शुक्ला, अंजू पाण्डेय, रेखा त्रिपाठी, रीना मिश्रा, इकलेश तिवारी, निशी पांडे आदि उपस्थित रहे।

प्रेमी की तलाश में यूपी से रीवा पहुंची युवती को मिली दुत्कार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। प्यार में पढ़कर अपना सब कुछ गवां चुकी एक युवती अपने प्रेमी की तलाश में उत्तर प्रदेश से रीवा पहुंची है। जहां वह युवक से शादी करने के लिए मिन्नत कर रही है। जबकि प्यार का दिखावा करते हुए शादी का झांसा देकर युवक ने उसके साथ कई बार गलत काम किया।

युवक अब युवती से शादी करने की एवज में 10 लाख रुपये की मांग कर रहा है। हालांकि दोनों के बीच दो बार थाने में समझौता भी हो चुका है। युवती के मुताबिक वह उत्तर प्रदेश की रहने वाली है। जिसकी दोस्ती करीब 3 वर्ष पूर्व फेसबुक के जरिये से रीवा जिले के पनवार थाना क्षेत्र के ग्राम जिरौहा निवासी चंचल विश्वकर्मा नामक युवक से हुई थी, फिर दोनों में नजदीकियां बढ़ती गईं। युवती के युवक से पहली बार प्रयागराज में मिली थी जहां युवक ने उसे भरोसे में लिया और शादी का झांसा देकर प्रयागराज के एक होटल में उसके साथ गलत काम किया। युवती के मुताबिक युवक ने उसे बहला फुसलाकर अब तक 60 हजार रुपये ले चुका है, और अब शादी करने के एवज में 10 लाख रुपये की मांग कर रहा है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।